राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, रविवार , 08 मार्च 2026

वर्ष 14,अंक 315, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

पुरानी रंजिश में युवक पर गोलीबारी, पुलिस ने 24 घंटे में सुलझाया मामला..03

केजरीवाल का भाजपा पर हमला, फांसीघर को टिफिन हाउस बताने पर भड़के..04

उत्तम नगर हत्याकांड : दोपहर से सुलग रही थी आग, रात में हुआ खूनी खेल; योजना बनाकर किया तरुण और उसके परिवार पर हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तम नगर के हस्तसाल जेजे कॉलोनी में विवाद की शुरुआत होली के दिन 4 मार्च दोपहर में ही हुई थी, लेकिन पुलिस को पीसीआर काल रात 11:09 बजे मिली। इस बीच कई घंटों तक आरोपित पक्ष बदला लेने की योजना बनाता रहा।

आरोपित पक्ष ने हाथापाई शुरू कर दी

स्थानीय लोगों के बीच-बचाव के बाद मामला फिर एक बार शांत हुआ, लेकिन

झगड़े की शुरुआत दोपहर 1:30 से 2:30 बजे के बीच हुई जब तरुण की 11 वर्षीय चचेरी बहन छत से होली खेल रही थी। अनजाने में एक पानी का गुब्बारा नीचे गली में फटा, जिसके छींटे पास से गुजर रही एक महिला पर गिर गए। महिला ने इसे अपमान मानकर तीखी गाली-गलौज शुरू कर दी। उस समय लोगों के शांत कराने पर वह वहां से चली गई पर दोपहर 3:00 बजे वह महिला अपने कई रिश्तेदारों को लेकर मौके पर जुट गई। तरुण के चाचा और परिवार ने माहौल शांत करने के लिए माफी भी मांगी, लेकिन आरोपित पक्ष ने हाथापाई शुरू कर दी।

आरोपितों ने तरुण को चारों तरफ से घेर लिया

आरोपितों के मन में रंजिश बैठ गई। शाम 5:00 बजे आरोपित पक्ष फिर से वहां इकट्ठा हो गए और लोगों से झगड़ने लगे। इस दौरान उन लोगों ने महिला और बच्ची के साथ भी बदतमीजी की। इस बार भी वे लोग धमकी देते हुए वहां से चले गए। पर शांत नहीं हुए और रात 10:30 बजे गली में फिर इकट्ठा हो गए जैसे ही तरुण अपनी बुलेट मोटरसाइकिल से दोस्तों से साथ होली खेल कर घर जाते हुए वह अपनी गली के मोड़ पर पहुंचा, वहां पहले से मौजूद आरोपितों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया।

तरुण ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया

रात 10:45 बजे आरोपितों ने बिना संभलने का मौका दिए लाठियों, लोहे की राड और पत्थरों से हमला बोल दिया। बचाने आए तरुण के चाचा और पिता पर भी हमला किया, जिससे तरुण के चाचा का सिर फट गया। प्रत्यक्षदर्शियों का दावा है कि जब तरुण बेदम होकर जमीन पर गिर गया, तब उसके सीने पर एक भारी पत्थर पटका गया ताकि उसके बचने की कोई गुंजाइश न रहे। लोगों की भीड़ जमा होने के बाद मामला शांत हुआ और सभी घायल जब अस्पताल पहुंचे तब रात 11.09 बजे पुलिस को इसकी सूचना मिली। 5 मार्च सुबह गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती तरुण ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

अर्धसैनिक बल और पुलिस की सुरक्षा में पूरा इलाका

इधर तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए पूरे इलाके को किले में तब्दील कर दिया गया है। घटना स्थल से लेकर आस पास के हर मार्ग पर पुलिस और अर्ध सैनिक बल तैनात किए गए हैं। जो किसी भी परिस्थिति से निपटने को तैयार हैं। पुलिस प्रशासन का कहना है कि कुछ असामाजिक तत्व इस घटना को गलत रंग देकर माहौल बिगाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उपायुक्त ने लोगों से अपील की है कि वे इंटरनेट मीडिया पर फैल रही अफवाहों पर विश्वास न करें। इंटरनेट मीडिया पर अफवाहों को रोकने के लिए साइबर टीम लगातार इस पर भी नजर बनाए हुए है। पुलिस हर गतिविधि पर कड़ी नजर रख रही है।

देर रात लोगों ने किया आरोपित के घर पर हमला

इस दौरान जहां शुक्रवार शाम हत्या के विरोध में लोगों ने नजफगढ रोड पर प्रदर्शन किया। साथ ही शाम में आरोपित के घर के सामने खड़ी कार और एक बाइक को आग के हवाले कर दिया। वहीं, देर रात कुछ प्रदर्शनकारी हस्तसाल जेजे कालोनी के आरोपित के घर में घुस गए। इस दौरान उन लोगों ने घर में जम कर तोड़फोड़ करने के साथ ही उनके सामान घर से बाहर फेंक दिया और उन सामानों में आग लगा दी। गौरतलब हो कि मामला दर्ज होने और घटना को तूल पकड़ता देख आरोपित और उसके परिवार के लोग घर खाली करके जा चुके थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जमा लोगों को वहां से हटाया और दमकल की मदद से आग पर काबू कर लिया।

मिडिल ईस्ट युद्ध पर अन्ना हजारे की पीएम मोदी से अपील, कहा- भारत आगे बढ़कर शांति की पहल करे

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मिडिल ईस्ट में बढ़ते सैन्य टकराव ने दुनिया भर में चिंता बढ़ा दी है। Israel, United States और Iran के बीच जारी संघर्ष अब दूसरे सप्ताह में पहुंच चुका है। लगातार हो रहे हमलों और जवाबी कार्रवाई के कारण क्षेत्र में तनाव काफी बढ़ गया है और सैकड़ों लोगों की जान जाने की खबरें सामने आ रही हैं। इसी बीच सामाजिक कार्यकर्ता Anna Hazare ने प्रधानमंत्री Narendra Modi को पत्र लिखकर भारत से शांति स्थापना के लिए पहल करने की अपील की है।

युद्ध में बढ़ती हिंसा पर जताई चिंता

अन्ना हजारे ने अपने पत्र में कहा कि विभिन्न देशों के बीच बढ़ता सैन्य टकराव बेहद चिंताजनक स्थिति पैदा कर रहा है। उनका कहना है कि युद्ध का सबसे ज्यादा असर आम नागरिकों पर पड़ता है, खासकर महिलाओं और बच्चों पर। उन्होंने लिखा कि युद्ध की खबरें बेहद दर्दनाक हैं और कई निर्दोष परिवार इसकी चपेट में आ रहे हैं।

भारत की शांति परंपरा का दिया हवाला

अन्ना हजारे ने अपने संदेश में भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपरा का जिक्र करते हुए कहा कि देश हमेशा से अहिंसा और संवाद का समर्थक रहा है। उन्होंने कहा कि दुनिया को हथियारों और युद्ध की नहीं, बल्कि विश्वास, बातचीत और समझौते की जरूरत है। उनके अनुसार युद्ध केवल विनाश लाता है, जबकि संवाद से स्थायी समाधान निकल सकता है।

पीएम मोदी से शांति पहल की अपील

अन्ना हजारे ने प्रधानमंत्री मोदी से आग्रह किया कि भारत तटस्थ रहते हुए वैश्विक शांति के लिए पहल करे। उन्होंने लिखा कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भूमिका लगातार मजबूत हुई है और कई मुद्दों पर देश ने सकारात्मक योगदान दिया है। ऐसे में अगर भारत शांति और मानवता के पक्ष में आगे आएगा तो यह पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा बन सकता है।

मिडिल ईस्ट में बढ़ता तनाव

रिपोर्टों के मुताबिक हाल के दिनों में अमेरिका और इजराइल की संयुक्त कार्रवाई में ईरान के कई शीर्ष नेताओं और सैन्य अधिकारियों के मारे जाने की खबरें आई थीं। इसके बाद ईरान ने भी जवाबी हमले तेज कर दिए हैं। बताया जा रहा है कि खाड़ी क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी ठिकानों और इजराइल के प्रमुख शहरों, जिनमें तेल अवीव भी शामिल है, पर मिसाइल और ड्रोन हमलों की घटनाएं सामने आई हैं। लगातार हो रहे हमलों के कारण पूरे क्षेत्र में अलर्ट की स्थिति बनी हुई है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी असर

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह संघर्ष लंबा खिंचता है तो इसका असर केवल क्षेत्रीय सुरक्षा तक सीमित नहीं रहेगा। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था, तेल की कीमतों और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे समय में दुनिया की नजर भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक और तटस्थ देश की भूमिका पर भी टिकी हुई है।

ममता मेरी छोटी बहन जैसी, लेकिन शायद नाराज हैं': राष्ट्रपति मुर्मू ने बंगाल सरकार पर साधा निशाना!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी दौरे के दौरान राष्ट्रपति ने राज्य सरकार की व्यवस्था और प्रोटोकॉल को लेकर सार्वजनिक रूप से असंतोष जाहिर किया। 9वें अंतरराष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचीं राष्ट्रपति ने कार्यक्रम स्थल बदलने और स्वागत व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए। अपने संबोधन में उन्होंने भावुक अंदाज में कहा कि वे 'बंगाल की बेटी' हैं और राज्य की मुख्यमंत्री को अपनी 'छोटी बहन' मानती हैं, लेकिन शायद मुख्यमंत्री उनसे नाराज हैं क्योंकि उनके स्वागत के लिए न तो मुख्यमंत्री और न ही कोई वरिष्ठ मंत्री मौजूद था।

कार्यक्रम स्थल बदलने पर जताई आपत्ति

यह कार्यक्रम मूल रूप से सिलीगुड़ी के बिधाननगर इलाके में आयोजित होना था, जहां बड़ी संख्या में संथाल समुदाय के लोगों के पहुंचने की संभावना थी। लेकिन प्रशासन ने सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन का हवाला देते हुए अंतिम समय में कार्यक्रम स्थल बदलकर गोसाईपुर कर दिया, जो बागडोगरा एयरपोर्ट के पास स्थित है। राष्ट्रपति ने इस फैसले पर सवाल उठाते हुए कहा कि बिधाननगर में कार्यक्रम आयोजित करने में कोई दिक्कत नहीं दिख रही थी और वहां बड़ी संख्या में लोग आसानी से इकट्ठा हो सकते थे।

खाली कुर्सियों पर भी की टिप्पणी

गोसाईपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कई सीटें खाली दिखाई दीं। इस पर भी राष्ट्रपति ने टिप्पणी करते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि किसी ने कार्यक्रम में बाधा डालने की कोशिश की है। बाद में राष्ट्रपति खुद बिधाननगर पहुंचीं और वहां का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में एक पौधा भी लगाया और स्थानीय लोगों से मुलाकात की।

आयोजकों का आरोप, कई प्रतिनिधियों को नहीं मिला पास

कार्यक्रम से जुड़े आयोजकों का कहना है कि कई संथाल प्रतिनिधियों को सुरक्षा पास नहीं मिलने के कारण कार्यक्रम स्थल तक पहुंचने से रोक दिया गया, जिससे उपस्थिति प्रभावित हुई। हालांकि सिलीगुड़ी के मेयर Gautam Deb ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि सुरक्षा कारणों से स्थल बदलना जरूरी था और राज्य सरकार की ओर से राष्ट्रपति का स्वागत किया गया।

प्रोटोकॉल को लेकर भी उठे सवाल

आम तौर पर राष्ट्रपति के किसी राज्य दौरे पर मुख्यमंत्री या कैबिनेट स्तर का मंत्री स्वागत के लिए मौजूद रहता है। इस बार ऐसा नहीं होने से राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने संथाल समुदाय की भूमिका की सराहना करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को याद किया और शिक्षा व विकास पर जोर दिया।

सियासी हलकों में बढ़ी चर्चा

इस पूरे घटनाक्रम के बाद राजनीतिक गलियारों में कई तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कुछ लोग इसे केंद्र और राज्य के बीच राजनीतिक तनाव से जोड़कर भी देख रहे हैं। हालांकि राष्ट्रपति ने स्पष्ट किया कि उनके मन में मुख्यमंत्री के प्रति कोई व्यक्तिगत नाराजगी नहीं है और वे उनके लिए शुभकामनाएं रखती हैं।

संक्षिप्त ख़बरें

MP- 90 वर्षीय बुजुर्ग महिला से दरिंदगी... 4 नकाबपोश बदमाशों ने किया गैंगरेप; हालत गंभीर

मध्य प्रदेश के खंडवा जिले से दिल दहला देने वाला और मानवता को शर्मसार करने वाली एक घटना सामने आई है. यहां 90 वर्षीय बुजुर्ग महिला के साथ चार नकाबपोश बदमाशों ने गैंगरेप किया. वारदात के बाद आरोपी महिला को लहूलुहान हालत में छोड़कर मौके से फरार हो गए. घटना जिले के पुनासा थाना क्षेत्र की है. घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी. घायल बुजुर्ग महिला को इलाज के लिए खंडवा जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है. जानकारी के मुताबिक, बुजुर्ग महिला गांव में अकेली रहती थी. उसकी एक बेटी है, जो दूसरे गांव में रहती है. घटना के बाद गांव के लोगों ने महिला की बेटी को सूचना दी. बेटी जब घर पहुंची तो उसने अपनी मां को खटिया पर लहूलुहान हालत में पड़ा देखा. इसके बाद तुरंत पुनासा थाना पुलिस को सूचना दी.

अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण कर जांच शुरू कर दी. पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है. घटनास्थल से सबूत भी जुटाए जा रहे हैं. वहीं इस घटना के बाद इलाके में हड़कंप मचा है.

गठित की गई कई टीमें

खंडवा के पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार राय ने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की अलग-अलग टीमें गठित की गई हैं. साथ ही आरोपियों की गिरफ्तारी पर 10 हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया गया है. पुलिस अधीक्षक ने कहा कि आरोपियों की गिफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है. पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा और मामले में सख्त कार्रवाई की जाएगी. वहीं ग्रामीणों ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी और सख्त सजा की मांग की है.

ओम बिरला लोकसभा के अहंकारी और उत्पाती छात्रों को संभालना जानते हैं'- अविश्वास प्रस्ताव से पहले पीएम मोदी का बयान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के खिलाफ विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर संसद में होने वाली बहस से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनका खुलकर समर्थन किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बिरला सदन की कार्यवाही को बेहद धैर्य और संयम के साथ चलाते हैं और लोकसभा के 'अहंकारी व उत्पाती छात्रों' को भी संभालना अच्छी तरह जानते हैं। पीएम मोदी का यह बयान ऐसे समय आया है जब सोमवार को संसद में स्पीकर के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होनी है।

कोटा में कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी की टिप्पणी

प्रधानमंत्री राजस्थान के कोटा में आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे, जहां उन्होंने कोटा से सांसद और लोकसभा स्पीकर ओम बिरला की कार्यशैली की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि बिरला का स्वभाव बेहद शांत और संतुलित है और वे हर परिस्थिति में सदन को व्यवस्थित तरीके से चलाने की क्षमता रखते हैं।

स्पीकर बनने के बाद दल से ऊपर उठकर काम

पीएम मोदी ने कहा कि लोकसभा स्पीकर बनने के बाद ओम बिरला किसी राजनीतिक दल के प्रतिनिधि नहीं रहते, बल्कि पूरे सदन के संरक्षक की भूमिका निभाते हैं। उनके अनुसार, बिरला पक्ष और विपक्ष दोनों के सांसदों को समान रूप से महत्व देते हैं और सदन में सभी की बात सुनने की कोशिश करते हैं।

सदन में संयम और धैर्य की मिसाल

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि कई बार संसद में तीखी बहस और शोर-शराबा होता है, लेकिन स्पीकर बिरला धैर्य के साथ स्थिति को संभालते हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई सदस्य उग्र या आक्रामक व्यवहार करता है तो भी बिरला शांत रहते हैं और सदन की गरिमा बनाए रखते हैं।

अविश्वास प्रस्ताव से पहले बढ़ी राजनीतिक चर्चा

विपक्ष की ओर से स्पीकर के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव को लेकर संसद का माहौल पहले से ही गरम है। सोमवार को होने वाली चर्चा में इस मुद्दे पर राजनीतिक दलों के बीच तीखी बहस होने की संभावना है। हालांकि प्रधानमंत्री के खुले समर्थन के बाद यह स्पष्ट है कि सरकार की ओर से स्पीकर के प्रति भरोसा बरकरार है।

शर्मनाक: पुलिस ने बांके बिहारी मंदिर के गोस्वामी और उनके परिवार किए 'हाऊस अरैस्ट, कृष्ण भक्तों में मची हाहाकार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दुनिया भर के कृष्ण भक्तों की आस्था के केंद्र वृन्दावन के बांके बिहारी मंदिर को लेकर प्रशासन का फिर हटलरी रवैया सामने आया है। इस बार स्थानीय प्रशासन व पुलिस ने मुख्यमंत्री सुरक्षा के नाम पर बांके बिहारी मंदिर के गोस्वामी समाज के साथ शर्मनाक रवैया अपनाते हुए उनको व उनके परिवारों को नजरबंद कर दिया । दरअसल गोस्वामी समाज मंदिर व्यवस्था के लिए बनाई गई सरकार की हाई पावर कमेटी की ज्यादतियों से तंग है और आए दिन कमेटी और गोस्वामियों के बीच टकराव हो रहा है।

गोस्वामी घरों में बंधक बनाए

लेकिन हद तो तब हो गई जब उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मथुरा दौरे की सूचना पर गोस्वामी परिवारों घरों में बंधक बनाकर उन पर पुलिस की तैनाती कर दी गई ताकि वे बाहर न निकल सकें और मुख्यमंत्री के समक्ष सच बयान न कर सकें । गोस्वामी समाज ने आरोप लगाया है कि मंदिर प्रबंधन से जुड़े मुद्दों को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार का रवैया कठोर होता जा रहा है। गोस्वामी समाज का कहना है कि मंदिर व्यवस्था के लिए बनाई गई सरकार की हाई पावर कमेटी के साथ उनका लंबे समय से टकराव चल रहा है। उनका आरोप है कि कमेटी के फैसलों और प्रशासनिक दखल से मंदिर की पारंपरिक व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

मुख्यमंत्री के दौरे से पहले नजरबंदी

गोस्वामी समुदाय का आरोप है कि जैसे ही योगी आदित्यनाथ के मथुरा दौरे की सूचना मिली, स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने कई गोस्वामी परिवारों को उनके घरों में ही रोक दिया। उनके घरों के बाहर पुलिस तैनात कर दी गई ताकि वे बाहर न निकल सकें।गोस्वामी समाज का कहना है कि ऐसा इसलिए किया गया ताकि वे मुख्यमंत्री के सामने मंदिर से जुड़ी अपनी समस्याएं और शिकायतें न रख सकें।

हम भगवान के सेवक हैं, अपराधी नहीं

बांके बिहारी मंदिर के मुख्य सेवायत अनंत गोस्वामी व सुधांशु गोस्वामी ने इस कार्रवाई का विरोध करते हुए गोस्वामी समाज ने कहा कि वे कोई आतंकवादी या अपराधी नहीं हैं, बल्कि भगवान के सेवक हैं। उनके साथ इस तरह का व्यवहार करना पूरी तरह अनुचित है और समाज इसे किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा। मंदिर के अनंत गोस्वामी ने कहा कि उन्हें नजरबंद करके स्थानीय अधिकारी सच को दबाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका आरोप है कि कुछ अधिकारी कथित रूप से भूमाफिया के प्रभाव में काम कर रहे हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या मुख्यमंत्री के सामने सिर्फ भाजपा समर्थक ही अपनी समस्याएं रख सकते हैं।

संवाद को तैयार नहीं सरकार

गोस्वामी समाज का आरोप है कि प्रशासन ने सुरक्षा का हवाला देकर उनके आवागमन पर रोक लगा दी। कुछ लोगों ने प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा अभद्र व्यवहार के आरोप भी लगाए।। गोस्वामी समाज का कहना है कि यह कदम धार्मिक परंपराओं और सेवायत अधिकारों का अपमान है। इन घटनाओं के बाद वृन्दावन में गोस्वामी समाज के लोगों ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि मंदिर की परंपराओं और पुजारियों के अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर बिना संवाद के फैसले किए जा रहे हैं। उन्होंने प्रशासन से बातचीत कर समाधान निकालने की मांग की है।

क्या है कॉरिडोर विवाद?

बांके बिहारी मंदिर में हर साल लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। भीड़ प्रबंधन और सुविधाओं को बेहतर बनाने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार मंदिर के आसपास एक बड़ा कॉरिडोर बनाने की योजना पर काम कर रही है। हालांकि, गोस्वामी समाज का कहना है कि इस परियोजना से मंदिर की पारंपरिक व्यवस्था और सेवायतों के अधिकार प्रभावित होंगे। इसी मुद्दे को लेकर लंबे समय से विवाद और विरोध जारी है।

क्यों बढ़ रहा विवाद?

विशेषज्ञों के अनुसार यह विवाद इसलिए भी बड़ा हो रहा है क्योंकि वृन्दावन विश्वभर में कृष्ण भक्तों का प्रमुख तीर्थ है। विदेशों में बसे लाखों हिंदू श्रद्धालुओं की आस्था भी इस मंदिर से जुड़ी है। ऐसे में धार्मिक विरासत और विकास परियोजनाओं के बीच संतुलन का मुद्दा अब राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय चर्चा का विषय भी बन सकता है। स्थिति को देखते हुए कई धार्मिक नेताओं और सामाजिक संगठनों ने प्रशासन और गोस्वामी समाज के बीच संवाद की मांग की है। उनका कहना है कि बातचीत के माध्यम से ही ऐसा समाधान निकाला जा सकता है जिससे श्रद्धालुओं की सुविधा भी बढ़े और मंदिर की परंपराएं भी सुरक्षित रहें।

हत्या कांड का पर्दाफाश: बॉयफ्रेंड ही निकला महिला का कातिल, पुलिस के सामने आरोपी ने किया चौकाने वाला खुलासा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश के नोएडा में अज्ञात महिला की हत्या के मामले का एक्सप्रेस-वे थाना पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार करते हुए उसके कब्जे से हत्या में प्रयुक्त कार और तीन लाख दो हजार रुपए नकद बरामद किए हैं। पुलिस ने शनिवार को हत्यारोपी को गिरफ्तार कर यह जानकारी दी।

अंडरपास के पास महिला की मिली थी डेड बाडी

उन्होंने बताया कि बीते दिनों दो मार्च को पंचशील अंडरपास के पास सर्विस रोड किनारे एक अज्ञात महिला का शव मिलने की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। प्रारंभिक जांच के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया और महिला की पहचान करने के प्रयास शुरू किए गए।

मुखबिर एवं इंटेलिजेंस की मदद से आरोपी तक पहुंची पुलिस

जांच के दौरान मृतका की पहचान कविता उर्फ काव्या, पत्नी शंकर निवासी साहिबाबाद, गाजियाबाद के रूप में हुई। परिजनों की तहरीर के आधार पर एक्सप्रेस-वे थाना में मामला दर्ज कर पुलिस ने जांच तेज कर दी। पुलिस टीम ने मैनुअल इंटेलिजेंस, इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस और मुखबिर तंत्र की मदद से मामले की पड़ताल की।

आरोपी को दिल्ली से नोएडा पुलिस ने उठाया

जांच के दौरान संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर आरोपी की पहचान विक्की पुत्र मोहनलाल माथुर के रूप में हुई। इसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी विक्की (34) निवासी गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, थाना मंडावली, पूर्वी दिल्ली को नोएडा सेक्टर-129 क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया।

तीन लाख दो हजार नकद बरामद बरामद

गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने आरोपी के कब्जे से घटना में इस्तेमाल की गई कार और तीन लाख दो हजार नकद बरामद किए जो मृतका अपने साथ लाई थी। आरोपी से पूछताछ की जा रही है और हत्या के पीछे की वजहों की भी गहनता से जांच की जा रही है। इस मामले में एक्सप्रेस-वे थाना में भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले से जुड़े अन्य पहलुओं की भी जांच जारी है और आवश्यकता पड़ने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

विश्व शान्ति का दिव्यास्त्र अहिंसा

मानव सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है उतना ही पुराना संघर्ष और हिंसा का इतिहास भी है। मनुष्य ने विज्ञान में प्रगति की है तकनीक में उन्नति की है और आकाश से लेकर समुद्र की गहराइयों तक अपने कदम बढ़ा दिए हैं। परन्तु एक सत्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पहले था कि यदि मानव के भीतर करुणा और अहिंसा नहीं है तो उसकी सारी प्रगति अधूरी है। आज विश्व के अनेक देशों में युद्ध और संघर्ष का वातावरण बना हुआ है। बड़े राष्ट्र अपनी शक्ति और प्रभुत्व दिखाने के लिए छोटे देशों पर दबाव बना रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि निर्दोष लोगों का जीवन संकट में पड़ गया है और मानवता पीड़ा से कराह रही है। ऐसे समय में संसार को यदि कोई सच्चा मार्ग दिखा सकता है तो वह है अहिंसा का मार्ग। मानव जीवन में धर्म का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। धर्म केवल पूजा पाठ या किसी विशेष सम्प्रदाय का नाम नहीं है बल्कि वह जीवन की वह चेतना है जो मनुष्य को मानव बनाती है। धर्म हमें संयम सिखाता है करुणा सिखाता है और दूसरों के जीवन के प्रति सम्मान करना सिखाता है। जब मनुष्य धर्म से दूर हो जाता है तब उसके जीवन में स्वार्थ अहंकार और हिंसा का प्रवेश हो जाता है। यही कारण है कि आज संसार के अनेक हिस्सों में अशान्ति का वातावरण दिखाई देता है।

अहिंसा को भारतीय संस्कृति ने सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। अहिंसा का अर्थ केवल किसी को शारीरिक रूप से चोट न पहुँचाना ही नहीं है बल्कि किसी भी प्राणी के प्रति मन वचन और कर्म से पीड़ा न पहुँचाना भी है। यह एक ऐसी भावना है जो मानव के भीतर दया और प्रेम का विस्तार करती है। जब मनुष्य अपने भीतर करुणा को जगाता है तब उसके भीतर से क्रोध और घृणा स्वतः समाप्त होने लगती है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंसा ने कभी भी स्थायी समाधान नहीं दिया। युद्ध चाहे किसी भी कारण से किया गया हो उसका परिणाम केवल विनाश ही रहा है। युद्ध में केवल सैनिक ही नहीं मरते बल्कि असंख्य निर्दोष नागरिक भी अपनी जान गंवा देते हैं। बच्चों का बचपन छिन जाता है माताओं की गोद सूनी हो जाती है और पूरे समाज की खुशियाँ समाप्त हो जाती हैं। युद्ध समाप्त होने के बाद भी उसके घाव वर्षों तक समाज को पीड़ा देते रहते हैं। आज दुनिया के कई देशों में युद्ध की आग जल रही है। कहीं सीमा विवाद के नाम पर संघर्ष हो रहा है तो कहीं सत्ता और वर्चस्व की लड़ाई चल रही है। बड़े देश अपनी सैन्य शक्ति और आर्थिक ताकत के बल पर छोटे देशों को दबाने की कोशिश करते हैं। यह प्रवृत्ति मानवता के लिए अत्यन्त खतरनाक है। जब शक्तिशाली राष्ट्र अपने अहंकार में आकर कमजोर देशों पर आक्रमण करते हैं तो उसका सबसे अधिक दुष्परिणाम उन निर्दोष लोगों को भुगतना पड़ता है जिनका उस संघर्ष से कोई सम्बन्ध ही नहीं होता। युद्ध में मरने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी का बेटा होता है किसी का पिता होता है और किसी का जीवन साथी होता है। जब बम और मिसाइलें गिरती हैं तो वे केवल भवनों को ही नष्ट नहीं करतीं बल्कि हजारों सपनों को भी मिटा देती हैं। युद्ध की विभीषिका से केवल सैनिक ही नहीं बल्कि सामान्य नागरिक भी प्रभावित होते हैं। भूख गरीबी और विस्थापन जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं और पूरा समाज संकट में घिर जाता है।

मानवता के लिए यह अत्यन्त पीड़ादायक स्थिति है कि आज भी दुनिया में समस्याओं का समाधान हिंसा और युद्ध के माध्यम से खोजा जा रहा है। जबकि इतिहास बार बार यह सिद्ध कर चुका है कि हिंसा से केवल हिंसा ही जन्म लेती है। जब एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण करता है तो प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है और संघर्ष की श्रृंखला लम्बी होती चली जाती है। इस प्रकार हिंसा का यह चक्र कभी समाप्त नहीं होता। ऐसे समय में संसार को अहिंसा के मार्ग की ओर लौटने की आवश्यकता है। अहिंसा केवल एक आदर्श नहीं बल्कि एक शक्तिशाली नीति है जो समाज को स्थायी शान्ति की ओर ले जा सकती है। भारत के महान नेता महात्मा गांधी ने इसी अहिंसा के मार्ग को अपनाकर विश्व को एक नई दिशा दी थी। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि बिना हथियार उठाए भी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया जा सकता है और सत्य तथा अहिंसा के बल पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अहिंसा का मार्ग साहस और धैर्य का मार्ग है। यह कमजोर लोगों का नहीं बल्कि महान आत्मबल वाले लोगों का मार्ग है। जो व्यक्ति या राष्ट्र अपने भीतर आत्मविश्वास और नैतिक शक्ति रखते हैं वही अहिंसा को अपनाने का साहस कर सकते हैं। अहिंसा हमें यह सिखाती है कि किसी भी समस्या का समाधान संवाद और समझदारी से किया जा सकता है। विश्व के सभी देशों को यह समझना होगा कि युद्ध और हथियारों की दौड़ से किसी का भला नहीं होने वाला। यदि मानवता को सुरक्षित रखना है तो राष्ट्रों को परस्पर विश्वास और सहयोग की भावना विकसित करनी होगी। शक्ति का उपयोग विनाश के लिए नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के नेता और समाज के बुद्धिजीवी मिलकर शान्ति का संदेश फैलाएँ। शिक्षा और संस्कार के माध्यम से नई पीढ़ी को यह सिखाया जाए कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। जब तक मानव के भीतर करुणा और सहानुभूति का भाव नहीं जागेगा तब तक शान्ति की स्थापना सम्भव नहीं है। यदि मानव जाति को अपने भविष्य को सुरक्षित बनाना है तो उसे अहिंसा को अपनाना ही होगा। यही वह मार्ग है जो भय और संघर्ष से भरे संसार को शान्ति और सुख की ओर ले जा सकता है। हिंसा का मार्ग विनाश की ओर ले जाता है जबकि अहिंसा का मार्ग सृजन और विकास की ओर। इसलिए आज समय की पुकार है कि हम सब मिलकर अहिंसा के संदेश को स्वीकार करें और मानवता की रक्षा के लिए आगे आएँ। जब मनुष्य के हृदय में करुणा और प्रेम का दीपक जल उठेगा तब ही विश्व में सच्ची शान्ति स्थापित हो सकेगी। अहिंसा ही वह दिव्य शक्ति है जो युद्ध की आग को बुझाकर संसार को सुख और शान्ति का मार्ग दिखा सकती है।

कांतिलाल मांडोत

कनाडा यूरेनियम डील: भारत की ऊर्जा क्रांति या पर्यावरणीय संकट की शुरुआत?

[कनाडा से यूरेनियम: नेट-जीरो का रास्ता या रेडिएशन का साया?]

[न्यूक्लियर पावर का नया अध्याय: क्या भारत पर्यावरण न्याय को भूल जाएगा?]

ऊर्जा के मोर्चे पर भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहाँ भविष्य की दिशा तय हो रही है–एक ऐसा भविष्य जहाँ बिजली की कमी अतीत बन जाए, कारखानों की चिमनियों से उठता धुआँ कम हो और हर घर तक पहुँचने वाली ऊर्जा कोयले की कालिख नहीं बल्कि स्वच्छ स्रोतों से पैदा हो। यह सपना केवल विकास का नहीं, बल्कि जलवायु सुरक्षा का भी है। लेकिन इस उजले भविष्य की राह में कुछ अंधेरे भी छिपे हैं। मार्च 2026 में भारत और कनाडा के बीच हुई अरबों डॉलर की यूरेनियम डील ने इसी द्वंद्व को फिर सामने ला खड़ा किया है। एक ओर यह समझौता ऊर्जा सुरक्षा और कम कार्बन उत्सर्जन का वादा करता है, तो दूसरी ओर खनन, रेडिएशन और पर्यावरणीय खतरों की चिंता भी बढ़ाता है। सवाल है कि क्या यह डील भारत के क्लाइमेट भविष्य को सुरक्षित बनाएगी या यह विकास की ऐसी कीमत होगी जिसे पर्यावरण और आदिवासी समुदायों को चुकाना पड़ेगा?

ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग की दिशा में भारत-कनाडा समझौता एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। यह केवल व्यापारिक सौदा नहीं बल्कि रणनीतिक साझेदारी का प्रतीक भी है। इस डील के तहत कनाडा की खनन कंपनी कैमेको भारत को 2027 से 2035 के बीच लगभग 22 मिलियन पाउंड यूरेनियम देगी, जिससे भारत के 24 परमाणु रिएक्टरों को ईंधन मिलेगा। भारत की वर्तमान परमाणु ऊर्जा क्षमता लगभग 8.88 गीगावाट है, जिसे सरकार 2047 तक लगभग 100 गीगावाट तक बढ़ाने का लक्ष्य रखती है। इसके लिए छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर और उन्नत परमाणु तकनीकों पर सहयोग की भी चर्चा है। बढ़ती ऊर्जा मांग और रूस जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर वैश्विक दबाव के बीच यह समझौता भारत को एक वैकल्पिक और अपेक्षाकृत स्वच्छ ऊर्जा मार्ग दे सकता है, इसलिए इसे ऊर्जा रणनीति का महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती के बीच परमाणु ऊर्जा को अक्सर एक संभावित समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। भारत ने 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन और 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य रखा है। इस परिप्रेक्ष्य में परमाणु ऊर्जा एक स्थिर बेसलोड प्रदान कर सकती है, जो सौर और पवन ऊर्जा की अनियमितता को संतुलित करती है। अध्ययनों के अनुसार परमाणु ऊर्जा से बिजली उत्पादन में कार्बन उत्सर्जन कोयले से कई गुना कम होता है, इसलिए यह जलवायु परिवर्तन से निपटने का महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। लेकिन ऊर्जा के इस स्वच्छ चेहरे के पीछे एक जटिल वास्तविकता भी छिपी है–यूरेनियम के खनन, प्रसंस्करण और अपशिष्ट प्रबंधन की प्रक्रिया पर्यावरणीय जोखिमों से भरी हुई है।

ऊर्जा की चमकदार बहस में यूरेनियम खनन के पर्यावरणीय दुष्प्रभाव अक्सर दबकर रह जाते हैं। खदानों से निकलने वाले रेडियोधर्मी टेलिंग्स यानी अपशिष्ट में थोरियम और रेडियम जैसे तत्व मौजूद रहते हैं, जो लंबे समय तक मिट्टी और जल स्रोतों को दूषित कर सकते हैं। कनाडा के सस्कैचेवान क्षेत्र में स्थित कई यूरेनियम खदानों के आसपास भूजल प्रदूषण और वन्यजीवों पर प्रभाव को लेकर समय-समय पर चिंताएँ उठती रही हैं। हालांकि, नियामक रिपोर्ट्स में कुछ साइटों पर सफाई प्रयास चल रहे हैं। भारी मात्रा में पानी के उपयोग और खनन के दौरान उत्पन्न कार्बन उत्सर्जन भी इस प्रक्रिया को पूरी तरह 'स्वच्छ' नहीं रहने देते। यही कारण है कि कई पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि परमाणु ऊर्जा के पूरे जीवन चक्र को ध्यान में रखे बिना इसे जलवायु समाधान के रूप में प्रस्तुत करना अधूरा दृष्टिकोण है।

इस पूरी बहस का सबसे संवेदनशील पहलू आदिवासी समुदायों से जुड़ा हुआ है। कनाडा में जिन क्षेत्रों में यूरेनियम खनन होता है, वहाँ डेने, क्री और मेटिस जैसे इंडिजिनस समुदाय सदियों से रहते आए हैं। कई सामाजिक संगठनों का दावा है कि इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को रेडिएशन से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा है। फेफड़ों के कैंसर, जेनेटिक विकार और अन्य बीमारियों के मामलों को लेकर वर्षों से चिंता व्यक्त की जाती रही है। कई आदिवासी समूहों का आरोप है कि उनकी जमीनों का इस्तेमाल खनन के लिए किया जाता है, लेकिन निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहमति और अधिकारों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता।

परमाणु ऊर्जा की यह बहस केवल वैश्विक नहीं, भारत में भी उतनी ही तीव्रता से गूंजती है। झारखंड की जादुगुडा यूरेनियम खदान इसका सबसे चर्चित उदाहरण है, जहाँ स्थानीय हो, संताल और मुंडा आदिवासी दशकों से स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को उठाते रहे हैं। कई अध्ययनों में इस क्षेत्र में जन्मजात विकृतियों, कैंसर और अन्य बीमारियों के मामलों को लेकर सवाल उठे हैं। स्वतंत्र अध्ययन इसकी पुष्टि करते हैं, हालांकि यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड इसे अस्वीकार करता है। टेलिंग पॉन्ड्स से रिसाव की घटनाएँ और जल स्रोतों में भारी धातुओं की मौजूदगी ने स्थानीय लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों में जब परमाणु ऊर्जा विस्तार की बात होती है, तो यह सवाल भी उठता है कि क्या विकास की कीमत हमेशा उन्हीं समुदायों को चुकानी पड़ेगी जो पहले से ही हाशिये पर हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद समाधान की संभावनाएँ भी मौजूद हैं। यदि परमाणु ऊर्जा को वास्तव में जलवायु समाधान बनाना है तो खनन से लेकर अपशिष्ट प्रबंधन तक हर चरण में कड़े पर्यावरणीय मानकों को लागू करना होगा। मजबूत पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, पारदर्शिता और स्थानीय समुदायों की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। आदिवासी समुदायों के लिए 'फ्री, प्रायर एंड इन्फॉर्म्ड कंसेंट' यानी पूर्व सहमति की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ ही नई तकनीकों जैसे छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर और उन्नत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों पर भी गंभीर निवेश जरूरी है। इससे परमाणु ऊर्जा के जोखिमों को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

ऊर्जा, पर्यावरण और न्याय के चौराहे पर खड़ी भारत-कनाडा यूरेनियम डील एक महत्वपूर्ण परीक्षा बन गई है। अंततः यह केवल ऊर्जा का सवाल नहीं है, बल्कि विकास, पर्यावरण और न्याय के बीच संतुलन की भी कसौटी है। यदि यह समझौता जिम्मेदार नीतियों और मजबूत निगरानी के साथ लागू किया जाता है, तो यह भारत के क्लाइमेट लक्ष्यों को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लेकिन अगर पर्यावरणीय जोखिमों और आदिवासी अधिकारों की अनदेखी की गई, तो यह डील एक नई समस्या का कारण भी बन सकती है। इसलिए असली सवाल यही है–क्या हम ऐसा विकास मॉडल चुनेंगे जो ऊर्जा सुरक्षा के साथ-साथ प्रकृति और मानव गरिमा की भी रक्षा करे? भारत के क्लाइमेट भविष्य का उत्तर शायद इसी संतुलन में छिपा है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

संपादकीय

आधी आबादी का पूरा आकाश: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, जो हर साल 8 मार्च को मनाया जाता है, महिलाओं की उपलब्धियों का उत्सव है और लैंगिक समानता की दिशा में संघर्ष का प्रतीक। यह दिन केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक वैश्विक आंदोलन का प्रतीक है जो सदियों से चली आ रही असमानताओं को चुनौती देता है। 1908 में अमेरिका की 15,000 महिलाओं ने न्यूयॉर्क की सड़कों पर उतरकर बेहतर कामकाजी परिस्थितियों, वोट का अधिकार और सम्मानजनक वेतन की मांग की थी। उस आंदोलन ने जन्म लिया, जो आज दुनिया भर में लाखों महिलाओं को प्रेरित करता है। संयुक्त राष्ट्र ने 1975 में इसे आधिकारिक रूप से मान्यता दी, और तब से यह दिन महिलाओं के अधिकारों, उनकी नेतृत्व क्षमता और सामाजिक न्याय की मांग का केंद्र बन गया है। भारत जैसे देश में, जहां महिलाएं प्राचीन काल से देवी के रूप में पूजित होती आई हैं, फिर भी वास्तविकता में उन्हें समान अवसरों से वंचित रखा जाता रहा है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि समानता का स्वप्न अधूरा है, जब तक हर महिला को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा न मिले।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो भारतीय महिलाओं का प्रतिरोध और नेतृत्व कभी थमा नहीं। प्राचीन काल में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने शास्त्रार्थ में अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता सिद्ध की, तो मध्यकाल में रानी लक्ष्मीबाई ने अठारह सौ सत्तावन के संग्राम में अपनी वीरता से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। आधुनिक भारत की नींव रखने में सावित्रीबाई फुले का योगदान अविस्मरणीय है, जिन्होंने वर्ष 1848 में पुणे में प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना की। उस समय जब समाज लड़कियों की शिक्षा को अधर्म मानता था, सावित्रीबाई पर पत्थर और कीचड़ फेंके जाते थे, किंतु उन्होंने हार नहीं मानी। इसी संघर्ष की परिणति थी कि आज भारत की बेटियां अंतरिक्ष से लेकर ओलंपिक के मैदान तक अपना परचम लहरा रही हैं। स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली और भीखाजी कामा जैसी महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र की मुक्ति का मार्ग स्त्री की सहभागिता के बिना संभव नहीं है।

आजादी के पश्चात भारतीय संविधान ने अनुच्छेद चौदह और पंद्रह के माध्यम से लैंगिक समानता को मौलिक अधिकार के रूप में प्रतिष्ठित किया। राजनीतिक पटल पर भारत ने विश्व को राह दिखाई जब इंदिरा गांधी देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं और अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से वैश्विक भूगोल को बदल दिया। वर्तमान समय में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का सर्वोच्च पद पर आसीन होना इस बात का प्रतीक है कि एक साधारण आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाली महिला भी अपनी योग्यता से शिखर तक पहुँच सकती है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का एक सशक्त उदाहरण पंचायती राज व्यवस्था है, जहाँ तैंतीस से पचास प्रतिशत आरक्षण के कारण आज लगभग चौदह लाख से अधिक महिलाएं सरपंच और पार्षद के रूप में ग्रामीण भारत की तस्वीर बदल रही हैं। हालांकि, संसद और विधानसभाओं में उनकी हिस्सेदारी अभी भी लगभग चौदह प्रतिशत के आसपास सिमटी हुई है, जिसके लिए निरंतर प्रयास और विधायी समर्थन की आवश्यकता है।

आर्थिक मोर्चे पर महिलाओं की स्थिति और उनकी भागीदारी विकास के मापदंडों को निर्धारित करती है। वैश्विक आर्थिक मंच की वर्ष 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत लैंगिक अंतराल सूचकांक में 146 देशों के बीच 127वें स्थान पर खड़ा है, जो यह दर्शाता है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में अभी लंबी दूरी तय करनी है। भारत मं महिला श्रम बल भागीदारी दर वर्तमान में लगभग सैंतीस प्रतिशत है, जबकि पुरुषों के मामले में यह आंकड़ा छिहत्तर प्रतिशत से अधिक है। इस अंतर का मुख्य कारण घरेलू उत्तरदायित्वों का असंतुलित बोझ और कार्यस्थलों पर सुरक्षा की कमी है। इसके अतिरिक्त, समान कार्य के लिए समान वेतन का सिद्धांत अभी भी पूर्णतः धरातल पर नहीं उतरा है; आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में लगभग बीस प्रतिशत कम पारिश्रमिक प्राप्त होता है। हालांकि, स्टार्टअप और उद्यमशीलता के क्षेत्र में बदलाव की लहर देखी जा रही है, जहाँ दस में से लगभग दो उद्यम महिलाओं द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य किसी भी समाज की प्रगति के आधार स्तंभ होते हैं। राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के पांचवें चरण के आंकड़े बताते हैं कि भारत में महिला साक्षरता दर में सुधार हुआ है और यह सत्तर प्रतिशत के पार पहुँच गई है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी पैंसठ प्रतिशत महिलाएं साक्षरता से वंचित हैं। लड़कियों के विद्यालय छोड़ने की दर अभी भी चिंता का विषय है, जिसका मुख्य कारण सुरक्षा, परिवहन की कमी और स्वच्छता संबंधी सुविधाओं का अभाव है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में मातृ मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है, जो प्रति लाख जीवित जन्मों पर संतानबे तक पहुँच गई है, लेकिन कुपोषण और रक्ताल्पता (एनीमिया) अभी भी एक बड़ी चुनौती है। भारत की लगभग संतावन प्रतिशत महिलाएं रक्ताल्पता से पीड़ित हैं, जो उनके कार्यबल और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। विज्ञान और खेल जगत में भारतीय महिलाओं ने उन रूढ़ियों को तोड़ा है जो उन्हें केवल घर की चारदीवारी तक सीमित मानती थीं। 'मिसाइल वुमन' के नाम से विख्यात टेस्सी थॉमस ने अग्नि मिसाइल परियोजना का नेतृत्व कर यह सिद्ध किया कि तकनीकी कौशल किसी लिंग का मोहताज नहीं है। खेल के मैदान में पीटी उषा की उड़ान से शुरू हुआ सफर आज मैरी कॉम के छह विश्व स्वर्ण पदकों, पीवी सिंधु के ओलंपिक पदकों और मिताली राज के क्रिकेट कीर्तिमानों तक पहुँच चुका है। ये उपलब्धियां केवल पदक नहीं हैं, बल्कि उन करोड़ों लड़कियों के लिए आशा की किरण हैं जो समाज के बंधनों को तोड़कर अपनी पहचान बनाना चाहती हैं।

यद्यपि उपलब्धियां गौरवशाली हैं, परंतु सामाजिक सुरक्षा और अपराध के आंकड़े एक भयावह तस्वीर भी प्रस्तुत करते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के वर्ष 2022 के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। प्रति घंटे दो से अधिक महिलाओं के साथ होने वाली यौन हिंसा और घरेलू उत्पीड़न के मामले यह बताते हैं कि केवल कानून का निर्माण पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज की चेतना में परिवर्तन अनिवार्य है। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में बाल विवाह की दर अभी भी चुनौतीपूर्ण स्तर पर है, जो लड़कियों के बचपन और उनके भविष्य को अंधकारमय बना देती है। निर्भया कांड के पश्चात कानून को और अधिक कठोर बनाया गया और त्वरित अदालतों की स्थापना की गई, किंतु न्याय की धीमी प्रक्रिया और सामाजिक लोकलाज अभी भी पीड़ितों के मार्ग की बाधा बनी हुई है।

सरकारी योजनाओं ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में उत्प्रेरक का कार्य किया है। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान ने लिंगानुपात में सुधार लाने और कन्या शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी प्रकार 'उज्ज्वला योजना' के अंतर्गत दस करोड़ से अधिक महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन प्रदान कर उन्हें धुएं से होने वाली बीमारियों से मुक्ति दिलाई गई है। 'मुद्रा योजना' के तहत वितरित ऋणों में लगभग सत्तर प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं, जो सूक्ष्म और लघु स्तर पर आर्थिक क्रांति का नेतृत्व कर रही हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ हुई हैं, बल्कि वे सामाजिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने महिलाओं के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोले हैं। 'डिजिटल इंडिया' अभियान के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं ई-कॉमर्स, ऑनलाइन बैंकिंग और शिक्षा से जुड़ रही हैं। कोविड महामारी के दौरान जब दुनिया ठहर गई थी, तब आशा कार्यकर्ताओं के रूप में नौ लाख से अधिक महिलाओं ने अग्रिम पंक्ति में रहकर टीकाकरण और स्वास्थ्य सेवाओं का जिम्मा संभाला। यह उनके अदम्य साहस और समर्पण का ही परिणाम था कि भारत इतनी बड़ी आपदा का सामना कर सका। आज तकनीक के युग में महिलाएं कोडिंग से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

निष्कर्षतः, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक प्रतिज्ञा है। यह संकल्प है उस समाज के निर्माण का जहाँ किसी व्यक्ति की क्षमता का आकलन उसके लिंग के आधार पर न होकर उसकी योग्यता के आधार पर हो। महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना नहीं है, बल्कि उन्हें एक ऐसा वातावरण प्रदान करना है जहाँ वे अपनी इच्छाओं और सपनों को बिना किसी भय के जी सकें। जैसा कि मलाला यूसुफजई ने कहा था कि हम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक हमारी आधी आबादी को पीछे रखा जाएगा। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का स्वप्न तभी साकार होगा जब देश की प्रत्येक महिला शिक्षित, सुरक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होगी। यह संघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक समानता का अधिकार केवल कागजों तक सीमित न रहकर हर घर और हर दिल की हकीकत न बन जाए। आज हमें यह प्रण लेना होगा कि हम अपनी बेटियों को केवल पढ़ाएंगे ही नहीं, बल्कि उन्हें गगन चूमने के लिए पंख भी देंगे।

महेन्द्र तिवारी

राज्यसभा के रास्ते नीतीश कुमार का वानप्रस्थ गमन!

नीतीश कुमार ने अब राज्यसभा का पर्चा भर कर वानप्रस्थ गमन का रास्ता चुन लिया है। पिछले करीब 20 सालों से बिहार की राजनीति के केंद्र में नीतीश कुमार का दबदबा रहा है । सरकारें बदलीं, गठबंधन बदले, चुनाव आए-गए, लेकिन एक छोटी सी अवधि को छोड़ दिया जाए तो मुख्यमंत्री की कुर्सी पर नीतीश कुमार ही बने रहे। 2005 से बिहार की राजनीति को दिशा देने वाले इस नेता ने अब राज्यसभा जाने की तैयारी कर ली है, और इसके साथ ही सूबे की सियासत में एक बड़ा बदलाव शुरू होने वाला लगता है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा राज्यसभा का नामांकन भरने से यह बात स्पष्ट हो गयी है कि बिहार की राजनीति से एक युग का अब अवसान होने जा रहा है। बिहार की राजनीति में पिछले दो दशकों से यदि किसी एक नेता का सबसे अधिक प्रभाव रहा है, तो वह नाम है नीतीश कुमार। वर्ष 2005 से लेकर अब तक बिहार की सत्ता का केंद्र लगभग लगातार उनके इर्द-गिर्द ही घूमता रहा है। अलग-अलग गठबंधनों, बदलते राजनीतिक समीकरणों और कई चुनावी उतार-चढ़ावों के बावजूद उन्होंने मुख्यमंत्री पद पर अपनी पकड़ बनाए रखी। ऐसे में नीतीश के द्वारा मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ने का ऐलान बिहार की राजनीति में एक बड़ा बदलाव के रुप में देखा जा रहा है। अगर देखा जाए लगभग साढ़े तीन दशकों तक बिहार की राजनीति दो नामों के इर्द-गिर्द भूमती रही, ये दो नाम हैं लालू प्रसाद यादव और नीतीश। इन दोनों नेताओं ने न केवल बिहार की सत्ता को आकार दिया, बल्कि राज्य की सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक दिशा भी तय की। अब जब दोनों ही नेता सक्रिय राजनीति से दूर हो रहे हैं, तब बिहार एक नए दौर के मुहाने पर खड़ा दिखाई दे रहा है। 1990 के दशक में जब लालू प्रसाद यादव सत्ता में आए, तब बिहार की राजनीति में एक नई सामाजिक चेतना का उदय हुआ। लालू ने 'सामाजिक न्याय' को केवल एक राजनीतिक नारा नहीं रहने दिया, बल्कि इसे एक आंदोलन का रूप दिया। पिछड़े वर्गों, दलितों और वंचित समुदायों की राजनीतिक भागीदारी को उन्होंने केंद्र में रखा। लंबे समय से सत्ता के गलियारों से दूर रहे वर्गों को उन्होंने राजनीतिक पहचान और आवाज दी। सत्ता की भाषा बदली, राजनीतिक चेहरे बदले और शासन के केंद्र में सामाजिक प्रतिनिधित्व की नई धारा दिखाई देने लगी। इसमें कोई दोमत नहीं है कि जेपी आंदोलन से निकले नेताओं की एक पूरी पीढ़ी ने पिछले तीन दशकों तक बिहार की राजनीति को दिशा दी। इस पीढ़ी में पुरानी पीड़ी के पीछे हटने का अर्थ है कि बिहार की राजनीति में नई पीढ़ी के नेताओं को अवसर मिलेगा। इन सबके बीच अगर बात नीतीश की की जाए तो, बिहार की राजनीति में उनकी भूमिका केवल एक मुख्यमंत्री की नहीं रही है, बल्कि वे लंबे समय तक राज्य की राजनीति के सर्वमान्य नेता रहे हैं। विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के लोग भी उन्हें स्वीकार करते रहे हैं। गठबंधन की राजनीति में कई बार वैचारिक मतभेद होने के बावजूद उन्होंने गठबंधन धर्म निभाया और राजनीतिक संतुलन बनाए रखा। उनकी खास पहचान उनकी सामाजिक योजनाओं और प्रशासनिक छवि से बनी। खास तौर पर महिलाओं के बीच उनकी पकड़ काफी मजबूत रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में भी महिलाओं का समर्थन एनडीए की जीत का एक बड़ा कारण माना गया था। इसी कारण जब तक वह बिहार की राजनीति में सक्रिय थे, तब तक विपक्षी दलों के लिए उन्हें सीधे चुनौती देना आसान नहीं था। हालांकि, इसी दौर में बिहार की छवि पर कई सवाल भी उठे। कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर आलोचना हुई और 'जंगलराज' जैसे शब्द राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन गए। विकास की रफ्तार धीमी पड़ने और उद्योगों के बंद होने से बिहार की अर्थव्यवस्था कमजोर होती गई। राज्य से बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हुआ और बिहार प्रवासी मजदूरों के प्रदेश के रूप में पहचाना जाने लगा। चीनी मिलों, जूट फैक्ट्रियों और कई छोटे उद्योगों के बंद होने से रोजगार के अवसर घटते गए। इस दौर में बिहार की पहचान सामाजिक न्याय की राजनीति के साथ-साथ पिछड़ेपन और आर्थिक संकट से भी जुड़ने लगी। साल 2005 में बिहार की राजनीति ने एक बड़ा मोड़ लिया जब नीतीश कुमार सत्ता में आए।

यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं था, बल्कि राजनीतिक प्राथमिकताओं में बदलाव की शुरुआत भी थी। नीतीश कुमार ने सामाजिक न्याय की राजनीति को विकास और प्रशासनिक सुधारों के साथ जोड़ने की कोशिश की। उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी और बिहार में सड़कों तथा पुलों का व्यापक जाल बिछाया। राज्य के दूरदराज इलाकों को राजधानी पटना से बेहतर तरीके से जोड़ने का प्रयास किया गया। एक समय ऐसा था जब बिहार के कई जिलों से पटना पहुंचने में पूरा दिन लग जाता था, लेकिन सड़क नेटवर्क के विस्तार के बाद यात्रा का समय काफी कम हो गया। यह बदलाव केवल भौतिक संरचना का नहीं था, बल्कि राज्य की मानसिकत्ता और विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम था। नीतीश कुमार ने शासन को अधिक प्रशासनिक रूप देने की कोशिश की और कानून-व्यवस्था को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में लाया। उनकी सरकार द्वारा शुरू की गई कई योजनाओं ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला। छात्राओं के लिए साइकिल योजना ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बदलाव लाया। पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण देने से स्थानीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। छात्रवृत्ति और प्रोत्साहन योजनाओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन कदमों ने बिहार की सामाजिक संरचना को धीरे-धीरे बदलने में भूमिका निभाई। नीतीश कुमार की छवि 'सुशासन बाबू' के रूप में स्थापित हुई। उन्होंने प्रशासनिक सुधार, कानून-व्यवस्था और बुनियादी विकास को अपनी राजनीति का आधार बनाया। उनके शासनकाल में बिहार की छवि धीरे-धीरे बदलने लगी। रष्ट्रीय स्तर पर भी बिहार को विकास के नए प्रयासों के संदर्भ में चर्चा मिलने लगी। विहार के विकास में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा। बिहार में सड़कों, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में जो बदलाव हुए, उससे राज्य में परिवर्तन आया। मगर भूलना नहीं चाहिए कि राजनीति में बदलाव हमेशा अनिश्चितता लेकर आता है। नीतीश के संभावित फैसले से भी बिहार की राजनीति में कई नए सवाल खड़े हो रहे हैं। क्या जदयू अपनी पुरानी ताकत बनाए रख पाएगी? क्या भाजपा बिहार में अपना मुख्यमंत्री चनाएगी ? क्या नई पीढ़ी के नेताओं को मौका मिलेगा ? और सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या नीतीश कुमार राष्ट्रीय राजनीति में नई भूमिका निभाएंगे ? इन सभी सवालों के जवाब आने वाले समय में ही मिलेंगे। लेकिन इतना तय है कि कुमार का यह फैसला केवल एक व्यक्ति के पद परिवर्तन की कहानी नहीं है। यह बिहार की राजनीति के एक लंबे अध्याय के समापन और एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत है।

आपको बता दें नीतीश का राज्यसभा जाना सिर्फ पद का बदलाव नहीं है; यह करीब 5 दशक लंबी राजनीतिक यात्रा का एक नया अध्याय भी हो सकता है। हाल ही में नीतीश कुमार ने खुद कहा है कि अपनी लंबी राजनीतिक जिंदगी में वे बिहार विधानसभा के सदस्य, विधान परिषद के सदस्य और लोकसभा के सांसद रह चुके हैं। अब वे राज्यसभा में भी सेवा देना चाहते हैं। और उसके बाद अगर उन्हें केंद्र सरकार में कोई भूमिका मिली, तो बिहार की राजनीति का यह बड़ा चेहरा फिर से राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते दिख सकता है। राजनीति में समय के साथ भूमिकाएं बदलती रहती हैं, लेकिन कुछ नेता ऐसे होते हैं जिनकी छाया लंबे समय तक बनी रहती है। नीतीश भी ऐसे ही नेताआ में गिने जाते हैं। मुख्यमंत्री के रूप में उनकी भूमिका चाहे समाप्त हो जाए, लेकिन बिहार और राष्ट्रीय राजनीति में उनकी मौजूदगी आगे भी चर्चा और प्रभाव का विषय बनी रहेगी।

आपको बता दें 2020 के बाद एनडीए में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बन गई थी। सीटों की संख्या साफ दिखा रही थी कि भाजपा के पास ज्यादा विधायक हैं, फिर भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही रहे। आखिर ऐसा क्यों? इसके 2 मुख्य कारण अक्सर बताए जाते हैं। पहला कारण उनकी सामाजिक आधार है। बिहार में नीतीश कुमार ने अति पिछड़े वर्गों और महिला मतदाताओं से बहुत मजबूत जुड़ाव बनाया है। शराबबंदी जैसी नीतियां और महिलाओं के लिए कल्याण योजनाओं ने उन्हें एक भरोसेमंद और विश्वसनीय नेता की छवि दी है।75 साल की उम्र में स्वास्थ्य कारणों से नीतीश कुमार अब कम मेहनत वाला रोल चुनना चाहते हैं। ऐसे में राज्यसभा उनके लिए एक सम्मानजनक और महत्वपूर्ण मंच हो सकता है। लेकिन बात यहां सिर्फ पद बदलने की नहीं है। यह पार्टी के भविष्य को सुरक्षित करने की कोशिश भी हो सकती है। चर्चा है कि नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार जल्द ही सक्रिय राजनीति में आ सकते हैं और उन्हें राज्य सरकार में कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है।

मनोज कुमार अग्रवाल

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254, E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

छत से गिरकर युवक गंभीर रूप से घायल,गंभीर अवस्था में जिला अस्पताल रेफर

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र की कोईली का पुरवा गांव में एक युवक के छत से असंतुलित होकर फर्श पर आकर गिरा। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे फौरन उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। जहां हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया। गांव निवासी सोनू (30) पुत्र रामबली छत पर चढ़े हुए थे। अचानक उनका संतुलन बिगड़ गया। इससे वह करीब 15 फुट ऊंचाई से नीचे फर्श पर आ गिरा। इससे उनके सिर पर गंभीर चोट आ गई। घर वाले उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य लेकर गए। जहां हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

बहू और बेटे पर बुजुर्ग पिता से मारपीट का आरोप

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र में पारिवारिक विवाद के चलते एक वृद्ध के साथ मारपीट किए जाने का मामला सामने आया है। पीड़ित वृद्ध ने अपनी बहू और बेटे पर पिटाई करने का आरोप लगाया है। पूरे ओरी मजरे महाखेड़ा गांव निवासी काली प्रसाद तिवारी (72) ने पुलिस से की गई शिकायत में बताया कि किसी बात को लेकर उसके बेटे और बहू ने उसके साथ मारपीट कर दी। इस घटना में उन्हें चोटें भी आई हैं। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने वृद्ध को मेडिकल के लिए सीएचसी भेजा है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

जहरीला पदार्थ खाने से महिला की हालत बिगड़ी,गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के महाखेड़ा गांव में शुक्रवार को एक महिला ने विशाक्त पदार्थ खा लिया। इससे उसकी हालत बिगड़ गई। परिजनों ने फौरन उसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां उसकी हालत गंभीर होने पर डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल पर कर दिया। गांव निवासिनी पूजा (22) पत्नी ललित को गंभीर अवस्था में इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य में भर्ती कराया गया था। जहां परिवारीजनों ने डॉक्टरों को बताया कि पूजा ने कोई विषाक्त पदार्थ खा लिया है। इमरजेंसी में तैनात डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद महिला को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घटना की सूचना पीआई जरिए पुलिस को दी गई है।

लखनऊ जंक्शन पर अब देखिए रेलवे में शूट हुई फिल्मों के शानदार क्लिप, लग गई LED स्क्रीन

लखनऊ जंक्शन पर लगी नई एलईडी स्क्रीन।

रेलवे परिसर में शूट फिल्मों के क्लिप प्रदर्शित।

यात्रियों को मनोरंजन और फिल्म जानकारी मिलेगी।

लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल हिन्दी फिल्मों की शूटिंग के लिए काफी मनपसंद स्थान रहा है। लखनऊ परिक्षेत्र में स्थित मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर समय-समय पर फिल्मों तथा वेब सीरीज की शूटिंग होती रही है। अब लखनऊ जंक्शन स्टेशन के कानकोर्स एरिया में एक एलईडी स्क्रीन लगाई गई है, जो रेलवे परिसर या ट्रेनों में शूट की गई फिल्मों के क्लिप को प्रदर्शित कर रही है। लखनऊ मंडल की इस पहल से स्टेशन पर आने वाले यात्रियों को मनोरंजन के साथ विभिन्न स्टेशनों पर शूट की गयी फिल्मों की जानकारियां मिल रही हैं। लखनऊ मंडल के विभिन्न स्टेशनों लखनऊ सिटी पर बरेली की बर्फी-2017, जबरिया जोड़ी-2019, छोटे नवाब-2020, 14 फेरे-2021, निकम्मा-2022, ब्रीथः इन्टू द शेडो सीजन-2-2022, इंस्पेक्टर अविनाश-2023, कंजूस मक्खीचूस-2023, द उमेश क्रानिकल्स-2024, कन्ट्रोल-2025 व सिंगल सलमा-2025 जैसी फिल्मों की शूटिंग की गयी। इसी तरह लखनऊ जंक्शन, ऐशबाग में भी फिल्मों व वेब सीरीज की शूटिंग की गयी है।

लखनऊ में LLB छात्र पर गोली चलाने वाले दो आरोपी गिरफ्तार, अन्य की तलाश जारी

● एलएलबी छात्र पर फायरिंग मामले में दो आरोपित गिरफ्तार।

पुरानी रंजिश के चलते हुई थी गोलीबारी की घटना।

अवैध पिस्टल बरामद, अन्य आरोपितों की तलाश जारी।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। इंदिरानगर के सुग्गामऊ इलाके में एलएलबी छात्र पर फायरिंग की घटना में पुलिस ने दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है, जबकि अन्य की तलाश में दबिश दी जा रही है। आरोपितों के कब्जे से .32 बोर की अवैध पिस्टल, एक कारतूस और एक खोखा बरामद किया है। इंदिरानगर के तकरोही के मायावती कालोनी निवासी विकास चौधरी उर्फ विक्की को गुरुवार दोपहर करीब तीन बजे सुग्गामऊ इलाके में गोली मार दी गई थी। विकास एलएलबी का छात्र है। घटना के बाद उसे तत्काल डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया, जहां डाक्टरों ने बताया कि गोली उसकी जांघ में लगी है और उसकी हालत खतरे से बाहर है।

घटना के संबंध में विकास के भाई आकाश चौधरी ने थाना इंदिरानगर में कौशर खान उर्फ दिलावर समेत छह लोगों के खिलाफ तहरीर दी थी। आरोप था कि पुरानी रंजिश के चलते आरोपितों ने विकास को घेरकर असलहे से फायर किया। इस मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की।

जांच के दौरान पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसी कैमरों की फुटेज खंगाली और सर्विलांस की मदद से संदिग्धों की पहचान की। इसके बाद गुरुवार देर रात करीब 11:15 बजे तकरोही के हर्ष विहार कालोनी निवासी मोहम्मद आलम को जरहरा इलाके के पास से गिरफ्तार किया गया। इसके बाद दूसरा आरोपित कुर्सी टिकैतगंज निवासी मोहम्मद रेहान है। पुलिस के मुताबिक दोनों आरोपित बेरोजगार हैं और पुरानी रंजिश के चलते विकास चौधरी पर पिस्टल से फायरिंग की थी। पकड़े गए आरोपितों से पूछताछ के आधार पर अन्य फरार आरोपितों की तलाश में पुलिस लगातार दबिश दे रही है।

अलीगढ़ में आंगन विवाद बना खूनी, पथराव और फायरिंग में दारोगा समेत दो घायल

अलीगढ़। मडराक थाना क्षेत्र के गांव पड़ियावली में बुधवार शाम आंगन से निकलने को लेकर हुए विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। दोनों पक्षों के बीच जमकर पथराव हुआ और एक पक्ष की ओर से मकान की छत से फायरिंग कर दी गई, जिससे दो लोग घायल हो गए। घटना से गांव में भगदड़ मच गई। सूचना पर नीरज जादौन कई थानों की फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया। घायलों को आगरा रोड स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मुख्य आरोपी सहित कई लोगों को हिरासत में ले लिया है। पड़ियावली निवासी सक्षम पुत्र मनीष का बुधवार शाम पड़ोसी कैलाश पुत्र परम से आंगन से निकलने के विवाद को लेकर कहासुनी हो गई। आरोप है कि कैलाश ने मनीष की बेटी के साथ मारपीट कर दी। विरोध होने पर वह मकान की छत पर चढ़ गया और वहां से फायरिंग शुरू कर दी। इसके बाद दोनों पक्षों में पथराव शुरू हो गया, जिससे गांव में अफरा-तफरी मच गई।

सचिवालय में राज्य परफॉर्मेंस असेसमेंट समिति की बैठक में शामिल होंगे ग्राम प्रधान अखिलेश यादव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। विकासखंड क्षेत्र की मुस्तफाबाद बेलहनी ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान अखिलेश यादव शुक्रवार को लखनऊ स्थित उत्तर प्रदेश सचिवालय में आयोजित राज्य परफॉर्मेंस असेसमेंट समिति की बैठक में शामिल होंगे। यह बैठक मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत आयोजित की जा रही है। इसमें प्रदेश की चयनित चार ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधानों को आमंत्रित किया गया है। जिसमें रायबरेली से अखिलेश यादव को बुलाया गया है। बैठक की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश शासन में कृषि उत्पादन आयुक्त दीपक कुमार करेंगे। ग्राम प्रधान ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायतों के कार्यों का मूल्यांकन करना है। पंचायतों में कराए गए विकास कार्यों, जनहित योजनाओं के क्रियान्वयन और पंचायत स्तर पर पारदर्शिता की समीक्षा की जाएगी। साथ ही पंचायतों के बेहतर प्रबंधन और विकास कार्यों को प्रोत्साहित करने पर भी चर्चा होगी। बैठक में चयनित ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधि अपने अनुभव साझा करेंगे। अच्छे कार्य करने वाली पंचायतों के मॉडल को अन्य पंचायतों तक पहुंचाने की भी योजना है।

कर्नाटक में 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया बैन, क्या अब यूपी की बारी?

● कर्नाटक ने 16 वर्ष से कम बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्रतिबंधित किया।

यूपी में लोगों ने इस फैसले का स्वागत किया, गाइडलाइन की मांग।

बच्चों के मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। सोशल मीडिया के प्रयोग से बच्चों में बढ़ रहे दुष्प्रभावों को लेकर पूरी दुनिया में चिंता जाहिर की जा रही है। आस्ट्रेलिया सहित कई देशों के बाद अब कर्नाटक सरकार ने इस दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए सोशल मीडिया बैन कर दिया है। बच्चों के सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने वाला कर्नाटक देश का पहला राज्य बन गया है। कर्नाटक सरकार के इस फैसले का यूपी में भी लोगों ने स्वागत किया है। लोगों ने यहां पर भी इस तरह की गाइड लाइन बनाने की मांग की है ताकि बच्चों का संपूर्ण शारीरिक और मानसिक विकास हो सके।

सोशल मीडिया के अधिक प्रयोग से बच्चों में कई तरह के दुष्प्रभाव सामने आ रहे हैं। पीजीआई और केजीएमयू जैसे बड़े चिकित्सा संस्थान कई बार सोशल मीडिया के अधिक प्रयोग से बच्चों में बढ़ रहे मानसिक और शरीरिक दुष्प्रभावों के बारे में रिपोर्ट जारी कर चुके हैं हाल के दिनों में कई इस तरह की घटनाओं भी सामने आ चुकी हैं जहां बच्चे सोशल मीडिया से अपराध की दुनिया में चले गए।

डाक्टरों के अलावा विशेषज्ञ भी लगातार बच्चों के मोबाइल प्रयोग को सीमित करने की बात कर चुके हैं। सेलिब्रिटी ग्रीन अपार्टमेंट की प्रीति चौबे कहती हैं कि आजकल बच्चे बहुत कम उम्र में मोबाइल और सोशल मीडिया के संपर्क में आ रहे हैं। इससे उनका ध्यान पढ़ाई से हटता है और कई बार वे गलत जानकारी या कंटेंट के संपर्क में आ जाते हैं। उनका मानना है कि कर्नाटक की तरह प्रदेश सरकार को भी इस दिशा में किसी तरह की गाइड लाइन बनाना चाहिए।

अलीगंज की अनुसुइया भंडारी का कहना है कि सोशल मीडिया का सही उपयोग समझने की उम्र 16 वर्ष के बाद ही आती है। इससे पहले बच्चों को इसकी दुनिया से दूर रखना ही बेहतर है। उनका मानना है कि यदि सरकार ऐसा नियम बनाए तो अभिभावकों को भी बच्चों की परवरिश में मदद मिलेगी। तकनीक का उपयोग जरूरी है, लेकिन उसकी एक सीमा भी होनी चाहिए। सरकार यदि इस दिशा में ठोस नीति बनाती है तो यह आने वाली पीढ़ी के हित में होगा।

अलकनंदा अपार्टमेंट की ही पिंकी भट्ट भी छोटे बच्चों के मोबाइल बैन के फैसले का स्वागत करते हुए कहती हैं कि मोबाइल में लगे रहने से पढ़ाई तो प्रभावित होती ही है बच्चों का सामाजिक व्यवहार भी बदल रहा है। अगर 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर रोक लगे तो यह बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बेहतर कदम होगा।

दुनिया में बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर सख्ती

» आस्ट्रेलियाः 2025 में 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया अकाउंट पर प्रतिबंध लागू किया गया।

» इंडोनेशियाः 2026 से 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए कई सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर रोक की तैयारी।

» फ्रांसः 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया अकाउंट बनाने पर अभिभावक की अनुमति अनिवार्य।

» स्पेन और डेनमार्कः 15-16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्रतिबंध पर कानून बनाने की प्रक्रिया जारी।

» कर्नाटकः 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया बैन का प्रस्ताव।

मुफ्त में घूम सकते हैं ताजमहल और आगरा के दूसरे स्मारक, इस खास दिन पर नहीं लगेगा कोई टिकट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आगरा। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर रविवार (आठ मार्च) को ताजमहल समेत सभी स्मारकों में पर्यटकों को निशुल्क प्रवेश मिलेगा। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) ने इसका आदेश जारी कर दिया है। भारतीय हों या विदेशी महिला-पुरुष उन्हें स्मारकों में प्रवेश के लिए टिकट नहीं लेना पड़ेगा।

हालांकि, ताजमहल में मुख्य मकबरे पर भीड़ प्रबंधन के लिए लागू 200 रुपये के टिकट में किसी तरह की छूट नहीं मिलेगी। एएसआइ ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सबसे पहले आठ मार्च, 2020 को स्मारकों को महिला पर्यटकों के लिए निशुल्क किया था। वर्ष 2021 से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के साथ ही पुरुषों को भी निशुल्क प्रवेश देने की व्यवस्था लागू की गई। इस बार अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम 'गिव टू गेन' (पाने के लिए देना) तय की गई है। एएसआइ ने आठ मार्च को सभी स्मारकों को निशुल्क करने का आदेश जारी कर दिया है।

ताजमहल में मुख्य मकबरे पर 10 दिसबंर, 2018 को भीड़ प्रबंधन के लिए भारतीय व विदेशी पर्यटकों पर 200 रुपये का अतिरिक्त टिकट लगाया था। मुख्य मकबरे पर जाने के लिए पर्यटकों को यह टिकट आठ मार्च को भी लेना होगा। विदेशी

पर्यटकों को 1100 रुपये और भारतीय पर्यटकों को 50 रुपये प्रवेश शुल्क का टिकट नहीं लेना होगा। अधीक्षण पुरातत्वविद स्मिथा एस. कुमार ने बताया कि ताजमहल में मुख्य मकबरे पर 200 रुपये का टिकट लागू रहेगा। ताजमहल समेत अन्य स्मारकों में पर्यटकों को निशुल्क प्रवेश मिलेगा।

सरसों काट रही महिलाओं पर मधुमक्खियों का हमला, चार घायल; दो की हालत गंभीर

दुर्घटना/हादसा

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के रासीगांव में शुक्रवार को सरसों की कटाई के दौरान मधुमक्खियों के झुंड ने अचानक हमला कर दिया। हमले में चार लोग घायल हो गए। इनमें दो महिलाओं की हालत गंभीर है। गांव निवासिनी पिंकी (40), कांति (60), पवन (32) और रामदुलारी (28) गांव से करीब दो किलोमीटर दूर खेत में सरसों काट रहे थे। इसी दौरान अचानक मधुमक्खियों का झुंड उन पर टूट पड़ा। मधुमक्खियों ने चारों को कई जगह डंक मार दिए। इससे सभी लोग बुरी तरह घायल हो गए। हमले के बीच किसी तरह पवन वहां से बचकर गांव पहुंचा। उसने ग्रामीणों को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलते ही ग्रामीण मौके पर पहुंचे। लोगों ने काफी प्रयास के बाद घायलों को मधुमक्खियों के चंगुल से छुड़ाया और उन्हें उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद पिंकी और कांति की हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। ग्रामीणों ने बताया कि खेतों के पास जंगल की झाड़ियों में मधुमक्खियों का बड़ा छत्ता लगा हुआ है। अज्ञात कारणों से मधुमक्खियां आक्रामक हो गई और हमला कर दिया।

लखनऊ-वाराणसी सुपरफास्ट का अब इन 2 स्टेशनों पर भी होगा ठहराव, उत्तर रेलवे की पहल से यात्रियों को मिलेगी सुविधा

● वाराणसी-लखनऊ सुपरफास्ट का शिवपुर, जलालगंज में ठहराव शुरू।

जौनपुर के यात्रियों को वाराणसी-लखनऊ आवागमन में सुविधा।

राज्यमंत्री, सांसद, विधायक ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। यात्रियों की सुविधा के लिए उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल ने गाड़ी संख्या 20401/20402 वाराणसी-लखनऊ-वाराणसी शटल सुपरफास्ट एक्सप्रेस का ठहराव जौनपुर जिले के शिवपुर व जलालगंज रेलवे स्टेशनों पर शुक्रवार से शुरू किया है। ठहराव से आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को वाराणसी व लखनऊ आवागमन में सुविधा मिलेगी। गाड़ी संख्या 20401 वाराणसी-लखनऊ सुपरफास्ट शटल एक्सप्रेस का शिवपुर रेलवे स्टेशन पर आगमन व प्रस्थान समय 05:55/05:56 बजे तय किया गया है। लखनऊ से वाराणसी जाने वाली गाड़ी संख्या 20402 का शिवपुर स्टेशन पर आगमन व प्रस्थान समय 22:09/22:10 बजे निर्धारित किया गया है। जलालगंज रेलवे स्टेशन पर गाड़ी संख्या 20401 वाराणसी-लखनऊ सुपरफास्ट शटल एक्सप्रेस का आगमन व प्रस्थान समय 06:26/06:27 बजे है, जबकि लखनऊ से वाराणसी जाने वाली गाड़ी का जलालगंज स्टेशन पर आगमन व प्रस्थान समय 21:23/21:24 बजे है।

सांसद प्रिया सरोज और राज्यमंत्री रविंद्र जायसवाल ने दी हरी झंडी

शिवपुर रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) स्टांप व न्यायालय शुल्क एवं पंजीयन रविंद्र जायसवाल की उपस्थिति में ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यहां पर लखनऊ मंडल की ओर से अपर मंडल रेल प्रबंधक/वाराणसी, स्टेशन निदेशक बृजेश कुमार यादव, वाराणसी कैंट, अर्पित गुप्ता उपस्थित रहे। इसी क्रम में जलालगंज रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में मछलीशहर सांसद प्रिया सरोज व विधायक सरोज तूफानी की उपस्थिति में ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यहां पर लखनऊ मंडल की ओर से वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक गौरव दीक्षित आदि मौजूद रहे।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा- नारी जब अपनी शक्ति पहचान लेती है तो बन जाती है 'नारायणी'

● महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता से कुरीतियां खत्म होंगी।

'केजी टू पीजी' शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जोर।

एचपीवी टीकाकरण व टीबी उन्मूलन अभियान पर चर्चा हुई।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता बढ़ाना ही बाल विवाह व दहेज जैसी कुरीतियों को खत्म करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। नारी स्वयं प्रेरणा का स्वरूप है और जब वह अपनी क्षमता पहचान लेती है तो 'नारायणी' बन जाती है। उन्होंने बाल विवाह और दहेज जैसी कुरीतियों को खत्म करने के लिए महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता को जरूरी बताया।

जन भवन में कर्नाटक और त्रिपुरा के 21 सदस्यीय मीडिया प्रतिनिधिमंडल से संवाद के दौरान उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, टीबी उन्मूलन और सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए चल रहे एचपीवी टीकाकरण अभियान समेत कई विषयों पर चर्चा की।

'केजी टू पीजी' शिक्षा की अवधारणा पर जोर देते हुए कहा कि तीन वर्ष के सभी बच्चों का आंगनबाड़ी में और छह वर्ष के बच्चों का कक्षा एक में शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन से उच्च शिक्षा में 50 प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

प्रदेश के विश्वविद्यालयों ने नैक, एनआइआरएफ, क्यूएस एशिया और क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग को लेकर भी उन्होंने चर्चा की। स्वास्थ्य क्षेत्र का उल्लेख करते हुए बताया कि प्रदेश में बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए निश्शुल्क एचपीवी टीकाकरण अभियान चल रहा है और अब तक करीब 50 हजार बालिकाओं का टीकाकरण हो चुका है।

सीरम इंस्टीट्यूट आफ इंडिया के सहयोग से आकांक्षी जिलों में तीन लाख डोज उपलब्ध कराई जा रही हैं। साथ ही टीबी उन्मूलन के लिए चार लाख मरीजों को गोद लेने का अभियान चलाया गया है। विशेष कार्याधिकारी डा. पंकज एल जानी और डा. सुधीर महादेव बोबडे ने उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य और टीकाकरण से जुड़े कार्यों की जानकारी दी।

पुरानी रंजिश में युवक पर गोलीबारी, पुलिस ने 24 घंटे में सुलझाया मामला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

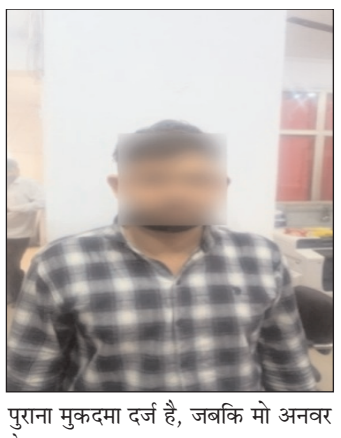

लखनऊ। पुरानी दुश्मनी के चलते इंदिरानगर क्षेत्र में एक युवक पर की गई जानलेवा फायरिंग की घटना को थाना इंदिरानगर पुलिस ने मात्र 24 घंटों के अंदर सफलतापूर्वक अनावरण कर लिया। पुलिस ने दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य की तलाश जारी है। घटनास्थल से 32 बोर की एक अवैध पिस्टल, एक जिंदा कारतूस और एक खोखा कारतूस बरामद किया गया है।

घटना 5 मार्च 2026 की शाम करीब छह बजे विशाल चौराहा के पास सी-567 के निकट हुई। पीड़ित दीनदयाल पुत्र करोहरी दास, इंदिरानगर लखनऊ के निवासी, अपनी बहन की शादी के लिए खरीदारी करने बाजार जा रहे थे। तभी अज्ञात बदमाशों ने उन पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। एक गोली पीड़ित की जांघ में लग गई, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है।

थाना इंदिरानगर में दर्ज प्राथमिकी संख्या 191(2)/191(3)/190/115(2)/109/61(2) के तहत मामला दर्ज किया गया, जिसमें धारा 307 (हत्या का प्रयास), 504 (जानबूझकर अपमान), 506 (आपराधिक धमकी) और आर्म्स एक्ट की विभिन्न धाराएं शामिल हैं। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया कि यह पुरानी रंजिश का मामला है। आरोपी पक्ष ने पीड़ित के साथ पहले भी कई बार विवाद किया था, और इस बार उन्होंने सुनियोजित तरीके से हमला बोला।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक लखनऊ के निर्देश पर थाना प्रभारी अनुराग के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई। टीम ने सीसीटीवी फुटेज, गवाहों के बयानों और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर अभियोजन को तेजी से आगे बढ़ाया। रविवार सुबह करीब 10:30 बजे अभियुक्त मोहल्लन उर्फ मो सिराज निवासी टिकट गंज गज धनकुड़ी बरबकी उम्र 21 वर्ष को गिरफ्तार किया गया। उसके कब्जे से 32 बोर की अवैध पिस्टल, एक जिंदा कारतूस और एक खोखा कारतूस बरामद हुआ। दूसरा अभियुक्त मो अलम उर्फ मो अनवर निवासी हर विहार कॉलोनी तकरोही थाना इंदिरानगर उम्र 22 वर्ष भी उसके साथी के रूप में पकड़ा गया।

पुलिस के अनुसार, दोनों आरोपी पीड़ित के पड़ोस के ही निवासी हैं और पुरानी रंजिश के कारण इस वारदात को अंजाम दिया। मोहल्लन के पास से बरामद हथियार से ही फायरिंग की गई थी। पूछताछ में दोनों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। पुलिस ने अन्य संलिप्त अभियुक्तों की तलाश के लिए दबिशें तेज कर दी हैं। इस सफल अनावरण को 'ऑपरेशन वॉरियर' प्रोजेक्ट के तहत अंजाम दिया गया, जो अपराध नियंत्रण के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान का हिस्सा है। प्रोजेक्ट के तहत 3/25 आयुष अधिनियम के अंतर्गत इंदिरानगर लखनऊ में दर्ज केस संख्या 191(2)/191(3)/190/115(2)/109/61(2) को प्राथमिकता दी गई।

गिरफ्तार अभियुक्तों का आपराधिक इतिहास भी सामने आया है। मोहल्लन के खिलाफ 3/25 आर्म्स एक्ट के तहत एक पुराना मुकदमा दर्ज है, जबकि मो अनवर के नाम पर 109/70 276/2023 धारा 323, 504, 506 भादवि तथा गुनाह इंदिरानगर लखनऊ का मामला दर्ज है।

गवाहों और सूत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण

पुलिस ने बताया कि इस अनावरण में स्थानीय गवाहों ने अहम भूमिका निभाई। नीरज सिंह उम्र अज्ञात, इंदिरानगर लखनऊ; उमेश वर्मा सिंह उम्र अज्ञात, इंदिरानगर लखनऊ; उमेश तिवारी अहमद उम्र अज्ञात, इंदिरानगर लखनऊ; उमेश गोविंद कुमार थाना इंदिरानगर लखनऊ; तथा कैलाश बहादुर उम्र अज्ञात, इंदिरानगर लखनऊ ने घटना के दौरान महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई। इसके अलावा, सूचना देने वाले गुप्त सूत्रों को गोपनीय रखा गया है।

थाना प्रभारी अनुराग ने बताया, 'हमारी टीम ने त्वरित कार्रवाई कर अपराधियों को सलाखों के पीछे पहुंचा दिया। इंदिरानगर क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए पुलिस सतर्क मोड में है। नागरिकों से अपील है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत दें। 'यह घटना क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति को लेकर चिंता बढ़ा रही है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि अपराधियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली में इस साल का सबसे गर्म दिन रहा शुक्रवार, मौसम विभाग ने बताया आने वाले दिनों में कितना चढ़ेगा पारा?

नई दिल्ली। लगातार बढ़ती गर्मी के बीच शुक्रवार को अब तक का सबसे गर्म दिन रिकॉर्ड किया गया। दिन भर आसमान साफ रहने और तेज धूप ने दिल्ली का मैक्सिमम टेम्परेचर 35 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा दिया। हालांकि, राजधानी की हवा अभी साफ है और AQI 200 से नीचे बना हुआ है। शुक्रवार को मैक्सिमम टेम्परेचर नॉर्मल से सात डिग्री ज्यादा 34.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। यह न सिर्फ इस गर्मी के मौसम में बल्कि इस साल का भी सबसे ज्यादा है। एक दिन पहले यानी गुरुवार को यह 34.3 डिग्री सेल्सियस था। शुक्रवार को मिनिमम टेम्परेचर नॉर्मल से 3.6 डिग्री ज्यादा 17.0 डिग्री सेल्सियस रहा। ह्यूमिडिटी लेवल 90 से 37 परसेंट के बीच रिकॉर्ड किया गया।

मौसम विभाग का अनुमान है कि शनिवार को दिन भर आसमान साफ रहेगा और तेज धूप निकलेगी। मैक्सिमम और मिनिमम टेम्परेचर क्रम से 34 और 17 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है। इस बीच, नेशनल कैपिटल की हवा अभी साफ है। सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (CPCB) के अनुसार, शुक्रवार को दिल्ली का AQI 172 रिकॉर्ड किया गया। यह 'मॉडरेट' कैटेगरी में आता है। अनुमान बताते हैं कि अगले कुछ दिनों में तापमान में ज़्यादा बदलाव की संभावना नहीं है।

80.48 करोड़ जमा कर पैरामाउंट फ्लोराविले में अटकी रजिस्ट्री खुली, 1521 फ्लैट खरीदारों को मिली बड़ी राहत

नोएडा। सेक्टर-137 स्थित पैरामाउंट की फ्लोराविले परियोजना से जुड़े 1521 घर खरीदारों की रजिस्ट्री का रास्ता साफ हो गया है। बिल्डर ने प्राधिकरण के बकाए में 80.48 करोड़ रुपये जमा किए हैं। रकम जमा होते हैं रजिस्ट्री के बीच आ रहीं अड़चनें भी दूर हो गई हैं। यह राशि अमिताभ कांत समिति की लागू हुई सिफारिशों के तहत जमा कराई गई। पैरामाउंट फ्लोराविले के 16 टावरों में 1521 फ्लैट शामिल हैं। प्रोजेक्ट 2010 में लांच हुआ था। 14 टावरों को 10 मार्च 2015 को ओसी (आक्यूपेंसी सर्टिफिकेट) मिल चुका था, जबकि शेष दो टावरों का आक्यूपेंसी सर्टिफिकेट जनवरी 2024 में जारी हुआ। अब तक 1421 फ्लैट्स की रजिस्ट्री हो चुकी है, लेकिन वित्तीय विवाद के कारण 100 फ्लैट्स की रजिस्ट्री अटकी हुई थी। डेवलपर ने अंडर प्रोटेस्ट भुगतान कर यह राशि जमा की, भले ही मामला हाईकोर्ट में लंबित है। प्रोजेक्ट अब यूपी रेरा के दायरे में नहीं आता और कोई वित्तीय बकाया शेष नहीं बचा है। पैरामाउंट ग्रुप ने कुल 106 करोड़ से अधिक की राशि नोएडा और ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण में जमा की है। जिसमें फ्लोराविले के लिए 80.48 करोड़ शामिल हैं। वर्षों से यहां रजिस्ट्री का इंतजार कर रहे फ्लैट मालिकों को जल्द ही मालिकाना हक मिल सकेगा।

गाजियाबाद नगर निगम बोर्ड में हंगामा तय! हाउस टैक्स बढ़ोतरी पर पार्षद भड़के, मीटिंग में विरोध की तैयारी

गाजियाबाद। हाउस टैक्स बढ़ोतरी को लेकर शनिवार को नगर निगम बोर्ड की मीटिंग होनी है। बढ़े हुए टैक्स से ज़्यादातर लोग नाखुश हैं। आने वाली बोर्ड मीटिंग में हंगामे की पूरी संभावना है। सूत्रों का कहना है कि नगर निगम के अधिकारी टैक्स कम करने के पक्ष में नहीं हैं। ज़्यादातर पार्षद हाउस टैक्स बढ़ोतरी के खिलाफ हैं। नगर निगम बोर्ड की मीटिंग तब हो रही है जब हाई कोर्ट ने हाउस टैक्स बढ़ोतरी को लेकर कोई राहत नहीं दी है। पार्षदों का कहना है कि हाउस टैक्स बढ़ोतरी को पूरी तरह से रद्द किया जाना चाहिए। हाई कोर्ट के फैसले में यह नहीं बताया गया कि हाउस टैक्स कितना बढ़ाया जाना चाहिए, बल्कि टैक्स बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए गए प्रोसेस को ही सही ठहराया गया है। इसलिए, हाउस टैक्स बढ़ोतरी के लिए इस्तेमाल किए गए प्रोसेस का ही इस्तेमाल करके टैक्स कम किया जा सकता है। टैक्स कम करने के बजाय, अधिकारी छूट सिस्टम को बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं। अभी, समय पर टैक्स जमा करने पर 20 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। संभावना है कि एक-दो नई शर्तों के साथ अतिरिक्त छूट का प्रस्ताव दिया जा सकता है।

कोई समझौता नहीं होगा, ट्रंप ने किया साफ, ईरान को बिना शर्त सरेंडर करना होगा, इसी में उसकी भलाई

● ट्रंप ने कहा कि ईरान पर हमलों में मारे गए अयातुल्ला अली खामेनेई के स्थान पर उनके बेटे मोजतबा खामेनेई का सर्वोच्च नेता के तौर पर चयन अस्वीकार्य होगा।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुक्रवार को ईरान पर अपना रुख और कड़ा कर दिया। ट्रंप ने दो टूक कह दिया कि ईरान के साथ कोई समझौता नहीं होगा, और उसे बिना शर्त आत्मसमर्पण करना होगा। इससे पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि ईरान के अगले सर्वोच्च नेता के चयन की प्रक्रिया में उन्हें शामिल किया जाना चाहिए। ट्रंप का यह बयान ऐसे समय में आया है जब ईरान पर अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमले लगातार जारी हैं तथा इन हमलों के जवाब में ईरान ने भी क्षेत्र में इजराइल एवं अमेरिकी ठिकानों पर हमले जारी रखे हैं। ट्रंप ने कहा कि ईरान पर हमलों में मारे गए अयातुल्ला अली खामेनेई के स्थान पर उनके बेटे मोजतबा खामेनेई का सर्वोच्च नेता के तौर पर चयन अस्वीकार्य होगा।

ईरान और अमेरिका-इजराइल गठबंधन के बीच संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है, मध्य पूर्व में लगातार सातवें दिन भी प्रत्यक्ष सैन्य टकराव जारी है और तनाव कम होने के कोई तत्काल संकेत नहीं दिख रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, पिछले छह दिनों में ईरान में इस युद्ध में मरने वालों की संख्या 1,200 से अधिक हो गई है, लेबनान में 70 से अधिक और इजराइल में लगभग एक दर्जन लोग मारे गए हैं। युद्ध हर दिन बढ़ता जा रहा है, जिससे मध्य पूर्व और उससे बाहर के 14 और देश प्रभावित हो रहे हैं। ईरान द्वारा कुवैत पर किए गए जवाबी हमलों के बाद अमेरिकी दूतावास बंद हो गया है, और ईरान में युद्ध बढ़ने के साथ ही पूरी तरह से काम बंद करने वाला यह दूसरा अमेरिकी राजनयिक मिशन बन गया है। कुवैत वह स्थान भी है जहां रविवार को एक ईरानी ड्रोन हमले में छह अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि कुछ देशों ने मध्यस्थता के प्रयास शुरू कर दिए हैं। यह स्पष्ट होना चाहिए: हम इस क्षेत्र में स्थायी शांति के लिए प्रतिबद्ध हैं, फिर भी हमें अपने राष्ट्र की गरिमा और संप्रभुता की रक्षा करने में कोई संकोच नहीं है। मध्यस्थता में उन लोगों को शामिल किया जाना चाहिए जिन्होंने ईरानी जनता को कम आंका और इस संघर्ष को भड़काया।

अजरबैजान ने ईरान पर ड्रोन हमले करने का बृहस्पतिवार को आरोप लगाया था जिसे तेहरान ने खारिज कर दिया। ईरान ने बृहस्पतिवार सुबह इजराइल और अमेरिका के कई अड्डों पर नये सिरे से हमले किए और धमकी दी कि हिंद महासागर में ईरान के एक युद्धपोत को टॉरपीडो के हमले से डुबोने के लिए अमेरिका को बहुत पछताना पड़ेगा। ईरान समर्थक हिजबुल्ला लड़ाकों के साथ संघर्ष बढ़ने के बीच इजराइल ने चेतावनी जारी कर बेरूत के दक्षिणी उपनगरों के लिए बड़े पैमाने पर निकासी का परामर्श जारी किया। संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षकों ने इजराइली सैनिकों की और टुकड़ियों के सीमा पार जाने के बीच दक्षिणी लेबनान में जमीनी लड़ाई की सूचना दी। इस बीच, पूरे ईरान में अमेरिका और इजराइल के हमले जारी हैं। उन्होंने ईरान की सैन्य क्षमता, नेतृत्व और परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाया है। ईरान ने जवाबी हमले करते हुए अरब में अपने पड़ोसियों को निशाना बनाया है। इन हमलों के कारण तेल आपूर्ति बाधित हो गई है और वैश्विक हवाई यात्रा बुरी तरह प्रभावित हुई है। संबंधित देशों के अधिकारियों के अनुसार, इस युद्ध में ईरान में कम से कम 1,230 लोग, लेबनान में 120 से अधिक लोग और इजराइल में लगभग एक दर्जन लोग मारे गए हैं। हमलों में छह अमेरिकी सैनिक भी मारे गए हैं।

गाजियाबाद के निर्यात कारोबारियों में हड़कंप! मिडिल ईस्ट युद्ध से शिपमेंट रुके, इंश्योरेंस-लॉजिस्टिक्स कॉस्ट बढ़ने का डर

गाजियाबाद। वेस्ट एशिया में बढ़ते युद्ध का असर जिले के एक्सपोर्ट बिज़नेस पर पड़ रहा है। ग्लोबल टेंशन ने यूरोप और खाड़ी देशों में बढ़ते एक्सपोर्ट के बीच मार्केट की अनिश्चितता बढ़ा दी है। एक्सपोर्टर्स का कहना है कि अगर युद्ध जारी रहा, तो नए ऑर्डर और शिपमेंट पर और असर पड़ सकता है। जिले से यूरोप, मिडिल ईस्ट और अफ्रीका में इंजीनियरिंग सामान, मशीनरी, स्टील प्रोडक्ट, इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट, टेक्सटाइल और हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्ट किए जाते हैं। इन मार्केट में बढ़ती डिमांड ने पिछले कुछ सालों में एक्सपोर्ट को बढ़ावा दिया है, लेकिन मौजूदा हालात ने ट्रेडर्स के बीच चिंता बढ़ा दी है। एंटरप्रेन्योर्स का कहना है कि युद्ध से इंटरनेशनल शिपिंग, इंश्योरेंस और लॉजिस्टिक्स कॉस्ट बढ़ने की संभावना है। इन हालात में, विदेशी खरीदार नए ऑर्डर देने में सावधानी बरत सकते हैं।

सिलापथार में आसू का संकल्प दिवस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम धेमाजी–6 मार्च, 2017 को सिलापथार में सांप्रदायिक संगठन निब्बास' की एक बड़ी मीटिंग हुई। मीटिंग के बाद, रैली निकाली गई रैली कर कुछ लोगों ने सिलापथार शहीद भवन पर अचानक हमला कर देते है। सुधाकांतडॉ भूपेन हजारिका और विष्णु-ज्योति की मूर्तियों को भी नुकसान पहुंचाने के बाद शहीद भवन के कई फर्नीचर को भी तोड़फोड़ किया। सिलापथार कांड के बाद प्रति वर्ष आसू ने बहर के साम्प्रदायिक अपशक्ति के खिलाफ एकजुट होकर मुक़ाबिला करने के लिए इलाके की हर वर्ग के लोगों को साथ

लेकर संकल्प दिवस पालन करते आ रहे है।

आज उस कला दिन को स्मरण करते हुए आसू के धेमाजी जिला समिति ने सिलापथार आंचलिक समिति की मदद से सिलापथार वासियों लोगों की सहयोग से सिलापथार शहीद भवन आंगन में संकल्प दिवस का आयोजन किया। सुबह शहीदों को श्रद्धांजलि देने के बाद, नगर में एक जुलूस निकाला गया, अनुष्ठान में आमंत्रण किए गए कलाकारों के दीहानाम के बाद सावधान रहने के लिए हाथ में हाथ पकड़कर संकल्प लिया गया ताकि बहार की बुरी ताकतें भविष्य में सिलापथार के लोगों बीच के रिश्ते को खराब न कर सकें।

खेल समाचार: बाघा 11 के सिर सजा जीत का ताज, कुदरी में क्रिकेट का महाकुंभ संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल कुदरी: 'मैदान छोटा हो या बड़ा, जज्बा बड़ा होना चाहिए।' इसी जज्बे के साथ जय मां बिरासिनी क्रिकेट क्लब टूर्नामेंट (सीजन 01) का फाइनल मुकाबला बाघा 11 और कुदरी 11 के बीच खेला गया। 12 ओवरों के इस कड़े मुकाबले में बाघा 11 ने अपने बेहतरीन खेल के दम पर खिताबी जीत दर्ज की।

मैच की मुख्य झलकियां:

कांटे की टक्कर: कुदरी 11 ने अंत तक हार नहीं मानी और उपविजेता का गौरव हासिल किया।

अतिथियों का जमावड़ा: मुख्य अतिथि और सरपंच राम प्रसाद सिंह (वरिष्ठ समाजसेवी) के साथ कैलाश कुमार अहिरवार (जिला अध्यक्ष, आजाद समाज पार्टी) ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। अतिथियों ने कहा कि ऐसे आयोजनों से ग्रामीण प्रतिभाओं को बड़ा मंच मिलता है।

इन कंधों पर थी जिम्मेदारी (आयोजन समिति): इस सफल आयोजन के पीछे चिंटू मिश्रा, पंकज वर्मन, रामटहल रैदास, पुरुषोत्तम पाव और उनकी पूरी टीम की कड़ी मेहनत रही।

चंद्रमा अहिरवार, विनय मिश्रा, अमित अंबेडकर, दीपक अहिरवार, राकेश पांडेय, विनय मिश्रा और विवेक गुप्ता सहित दर्जनों सहयोगियों ने दिन-रात एक कर इस टूर्नामेंट को यादगार बना दिया।

दर्शकों का उत्साह:-

मैच के दौरान कमेंट्री और खिलाड़ियों के चौके-छक्कों पर दर्शकों का उत्साह देखते ही बनता था। आस-पास के गांवों से आए सैकड़ों खेल प्रेमियों ने इस ऐतिहासिक मैच

का आनंद लिया।

> 'हार तो केवल एक सबक है, असली जीत तो खेल भावना की हुई है।' > – आयोजन समिति, जय मां बिरासिनी क्रिकेट क्लब।

केजरीवाल का भाजपा पर हमला, फांसीघर को टिफिन हाउस बताने पर भड़के

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के नेशनल कन्वीनर अरविंद केजरीवाल, फांसी के मुद्दे पर असेंबली कमेटी के सामने पेश होने के बाद असेंबली से बाहर आते हुए गुस्से में दिखे। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली सिर्फ एक साल में बर्बाद हो गई है, लेकिन भाजपा को लोगों की परेशानियों की कोई फिक्र नहीं है। भाजपा शहीदों का अपमान करने पर तुली हुई है और इसीलिए वह यह साबित करने की कोशिश कर रही है कि फांसीघर टिफिन हाउस है।

केजरीवाल ने कहा कि उन्होंने सरकार और असेंबली कमेटी से सबूत मांगा कि फांसीघर टिफिन हाउस है, लेकिन भाजपा के पास कोई सबूत नहीं था। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा का पहला मकसद दिल्ली की परेशानियों से ध्यान भटकाना और शहीदों का अपमान करना है।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के राज में यह कभी मुमकिन नहीं होगा। उन्होंने कहा कि सरकार जनता की परेशानियों पर ध्यान नहीं दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रदूषण बहुत बुरा है, सड़कें टूटी हुई हैं और मोहल्ला क्लीनिक बंद हो रहे हैं। अस्पतालों में दवाएं खत्म हो रही हैं, पानी-बिजली नहीं है और सिर्फ भारी-भरकम बिल आ रहे हैं।

केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली असेंबली कॉम्प्लेक्स एक ऐतिहासिक इमारत है। उनके मुताबिक, 2022 में उस समय के स्पीकर राम निवास गोयल की कोशिशों से पता चला कि इस बिल्डिंग के एक कोने में फांसी का तख्ता है, जहां आज़ादी के दीवानों को फांसी दी जाती थी। उस समय के स्पीकर ने मुझे चीफ मिनिस्टर के तौर पर बुलाया और कहा कि इसे टूरिस्ट के लिए खोल देना चाहिए ताकि लोग इससे इंस्पिरेशन ले सकें। इसके बाद हमने तख्ता खोला और उसका उद्घाटन किया।

आप ने आरोप लगाया है कि जब केजरीवाल असेंबली पहुंचे तो Z-प्लस सिक्योरिटी होने के बावजूद उनकी सुरक्षा में लगे पी.एस.ओ. को दिल्ली पुलिस ने बाहर ही रोक दिया और अंदर नहीं जाने दिया।

केजरीवाल के आने से पहले आप के वर्कर और एम एल ए असेंबली के बाहर पहुंच गए थे। उन्होंने असेंबली में घुसने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने बैरिकेड लगाकर उन्हें रोक दिया। इसके बाद आप वर्करों ने प्रोटेस्ट शुरू कर दिया जो केजरीवाल के आने तक चलता रहा। कमिटी की मीटिंग शुरू होने से पहले असेंबली ने सिर्फ कमिटी की तरफ से बुलाए गए लोगों को ही अंदर आने दिया था। इस ऑर्डर के बाद आप के स्टेट प्रेसिडेंट सौरभ भारद्वाज, जो केजरीवाल की कार से गेट पर पहुंचे थे, उन्हें सिक्योरिटी वालों ने अंदर नहीं जाने दिया।

श्रीमणि ने दिल्ली में मनाया 10वां स्थापना दिवस-फ़िनटेनिटी के साथ डिजिटल सशक्तिकरण का नया संकल्प

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली: भारत की अग्रणी डिजिटल वित्तीय सेवा कंपनी श्रीमणि ने अपना 10वां स्थापना दिवस 'फ़िनटेनिटी' थीम के साथ दिल्ली स्थित सनराईज पार्टी हॉल में भव्य रूप से मनाया। इस अवसर पर सहयोगी कंपनियाँ (डिजिसेवा) एवं सरल टेक्नोलॉजी की अनुभवी टीम, चैनल पार्टनर्स तथा विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं डॉ ममतामयी प्रियदर्शनी

स्टेट चेयरपरसन इंडियन इंडस्ट्रीज एस्सोसिएसन दिल्ली उन्होंने अपने संबोधन में श्रीमणि द्वारा ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में डिजिटल वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की तथा एमएसमी एवं एग्री-उद्यमिता के क्षेत्र में विस्तार हेतु महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। कार्यक्रम में एमएसमी मेंटर, सीए हेमेंद्र गुप्ता डिजिसेवा के सी ई ओ, सीए, सुधीर झा, ग्रुप ऑफ़ कंपनी के सीएफओ, सीए, जय राम ,तथा सीटीओ कंपनी की वर्तमान उपलब्धियाँ:दस प्लस राज्यों में संचालन पचास प्लस समर्पित टीम सदस्य दसहजार सक्रिय चैनल पार्टनर्स

डिजिटल बैंकिंग, बीमा, बिल पेमेंट, क्रेडिट रिपोर्ट एवं फिनटेक सेवाओं में मजबूत उपस्थिति भविष्य का विज़नः

श्रीमणि का लक्ष्य आने वाले वर्षों में भारत के प्रत्येक पिन कोड तक डिजिटल वित्तीय सेवाएँ पहुँचाना है, जिससे ग्रामीण एवं वंचित वर्ग को सशक्त बनाया जा सके। कंपनी के फाउंडर एंड डायरेक्टर ने अपने सम्बोधन में कहा 'यह दस वर्षों की यात्रा केवल व्यवसायिक सफलता नहीं, बल्कि विश्वास, पारदर्शिता और डिजिटल सशक्तिकरण का परिणाम है। हम 'दस से अनंत तक' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। समारोह के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले टीम सदस्यों एवं चैनल पार्टनर्स को सम्मानित भी किया गया।

LPG बुकिंग रूल बदला: 15 से बढ़ाकर 21 दिन का अंतर, 10 लाख कंज्यूमर्स प्रभावित

ग्रेटर नोएडा। घरेलू गैस सिलेंडर की बुकिंग अब 21 दिन के गैप पर हो सकेगी। पहले बुकिंग का टाइम 15 दिन था। दुनिया भर में बिगड़ते हालात, खासकर ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव की वजह से कच्चे तेल और गैस की सप्लाई में अनिश्चितता बढ़ गई है। इसलिए, घरेलू LPG सिलेंडर के लिए लॉकिंग पीरियड में बदलाव किया गया है। पहले यह टाइम 15 दिन था, लेकिन अब इसे शुक्रवार से बढ़ाकर 21 दिन कर दिया गया है। इस बदलाव से जिले के करीब 10 लाख घरेलू गैस सिलेंडर कंज्यूमर पर असर पड़ेगा। सप्लाई डिपार्टमेंट का दावा है कि यह कदम पैनिक बुकिंग को रोकने और मौजूद स्टॉक को बेहतर तरीके से मैनेज करने के लिए उठाया गया है, ताकि मार्केट में बनावटी कमी को रोका जा सके। ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच लड़ाई की वजह से इंटरनेशनल मार्केट में तेल और गैस की कीमतों में उछाल आया है। अगर तनाव और बढ़ता है, तो सप्लाई पर असर पड़ सकता है। इससे इकॉनमी पर बुरा असर पड़ेगा। स्वास्थ्य सेक्टर पर भी असर पड़ने का खतरा है।

25 साल के इंतजार के बाद जेवर को मिली बड़ी सौगात, एयरोड्रम लाइसेंस मिलते ही उद्घाटन की तिथि का ऐलान जल्द

● नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर को एयरोड्रम लाइसेंस मिल गया है, जिससे इसके उद्घाटन का रास्ता साफ हो गया है।

● 25 साल के लंबे इंतजार के बाद जेवर को यह बड़ी सौगात मिली है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जेवर। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर में बनकर तैयार हो चुका है, उद्घाटन के लिए सबसे जरूरी एयरोड्रम लाइसेंस मिलने के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय से समय मिलने के साथ ही तिथि का ऐलान हो जाएगा। प्रदेश के सबसे बड़े औद्योगिक जिले का सबसे पिछड़े क्षेत्र जेवर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विकास मॉडल के प्रयासों से विश्व के चौथे और एशिया के सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की सौगात मिलने जा रही है।

इंटरनेशनल एयरपोर्ट पूरी तरह तैयार

पिछड़ेपन से जूझ रहे जेवर के लोगों को इस महत्वपूर्ण विकास परियोजना के लिए 25 वर्षों का लंबा इंतजार करना पड़ा। केंद्र और प्रदेश की डबल इंजन भाजपा सरकार ने छह जुलाई 2017 को ज़ेवर में एयरपोर्ट निर्माण के लिए साइट क्लीयरेंस दी थी, जिसके बाद परियोजना परवान चढ़ी और नौ साल बाद यात्री और कार्गो सुविधा के लिए इंटरनेशनल एयरपोर्ट पूरी तरह तैयार है।

कांग्रेस सरकार ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई

जेवर के लोग वर्ष 2001 से इंटरनेशनल एयरपोर्ट का सपना देख रहे हैं। वर्तमान रक्षा मंत्री और तत्कालीन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह ने केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति देने का प्रयास किया था। बाद में बसपा सुप्रीमो मायावती ने गृह जनपद होने की वजह से 2008 में केंद्र को जेवर में एयरपोर्ट के लिए प्रस्ताव भेजा, लेकिन केंद्र में कांग्रेस की सरकार ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और एयरपोर्ट परियोजना खटाई में भी पड़ गई।

परियोजना परवान नहीं चढ़ सकी

भाजपा सरकार में स्थानीय सांसद डॉ. महेश शर्मा के नागरिक उड्डयन मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री बनते ही जेवर में एयरपोर्ट के परियोजना को हवा मिली। प्रदेश में तत्कालीन सपा सरकार से तालमेल न बैठने पर परियोजना परवान नहीं चढ़ सकी।

बाद में तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने जेवर के अलावा टुंडला में हिरनगांव और आगरा के एत्मादपुर में परियोजना के लिए केंद्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजा था, लेकिन प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद वर्ष 2017 में इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर में ही बनाने पर मुहर लगी जिससे आज जेवर विश्व पटल पर नई पहचान बना रहा है।

बड़ा लंबा सफर किया तय...

» वर्ष 2001 में राजनाथ सिंह ने जेवर में एयरपोर्ट का केंद्र को प्रस्ताव भेजा

» वर्ष 2008 में मायावती ने केंद्र फिर से एयरपोर्ट के लिए प्रस्ताव भेजा।

» वर्ष 2012 में अखिलेश यादव सरकार ने परियोजना को ठंडे बस्ते में डाल दिया।

» 2013 में राज्य सरकार ने टुंडला के हिरनगांव में एयरपोर्ट का प्रस्ताव दिया।

» 2014 में राज्य सपा सरकार ने आगरा के एत्मादपुर में एयरपोर्ट का प्रस्ताव दिया।

» 2017 में प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने जेवर में एयरपोर्ट बनाने की घोषणा की

» 6 जुलाई 2017 को जेवर में एयरपोर्ट निर्माण के लिए साइट क्लीयरेंस प्रदान की गई

» नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने मई 2018 में एयरपोर्ट के निर्माण को सैद्धांतिक मंजूरी दी।

» 2019 में ज्यूरिक इंटरनेशनल को एयरपोर्ट के विकास और 40 साल का संचालन मिला।

» 2020 में जेवर के छह गांव की 1239 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहण का काम पूरा।

» 25 नवंबर 2021 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की नींव रखी।

» 5 मार्च 2026 को बीसीएएस ने नोएडा एयरपोर्ट को सिक्योरिटी क्लीयरेंस दिया।

» 6 मार्च 2026 को डीजीसीए ने एयरपोर्ट को एयरोड्रम लाइसेंस जारी कर दिया।

Iran के खिलाफ उठाई आवाज, सासंद ने तोड़ दिया फौजी का हाथ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिकी संसद में आर्ड फोर्स से जुड़ी सुनवाई में उस समय हंगामा हो गया जब अमेरिकी सासद टिम शीही ने प्रदर्शन कर रहे पूर्व मरीन सैनिक ब्रायन मैकगिनिस को बैठक से बाहर निकलवाया। सुरक्षाकर्मियों ने उन्हे जबरन बाहर निकालने की कोशिश की, जिसमे ब्रायन का हाथ टूट गया। ब्रायन अमेरिका के ईरान के खिलाफ युद्ध में शामिल होने के फैसले का विरोध कर रहे थे। सुनवाई के दौरान अचानक उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, 'अमेरिका इस्त्राइल के लिए यह युद्ध नहीं लड़ना चाहता।' इसके बाद पुलिस ने उन्हें बाहर निकालने की कोशिश की। रिपब्लिकन सेनेटर टिम शीही भी उन्हें बाहर धकेलने में शामिल हो गए। इस दौरान ब्रायन ने दरवाजे को पकड़ लिया और नारे लगाते रहे। इसी में उनका हाथ फस गया और टूट गया।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने ईरान पर किए जा रहे हमलों को रोकने के लिए लाए गए युद्ध शक्तियों से संबंधित प्रस्ताव को बृहस्पतिवार को बहुत कम अंतर से खारिज कर दिया। मतों का यह अंतर संसद के भीतर बढ़ती असहजता का शुरुआती संकेत माना जा रहा है, क्योंकि तेजी से फैल रहा इस युद्ध का दायरा अमेरिका की घरेलू और वैश्विक प्राथमिकताओं को बदल रहा है। पिछले कुछ दिनों में यह दूसरा प्रस्ताव है जो असफल हुआ है। इससे पहले सीनेट ने ऐसे ही एक प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। सांसदों के सामने जान-माल के नुकसान, भारी खर्च और अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों की परीक्षा समेत युद्ध के कारण पैदा हुई स्थिति से चिंतित अमेरिकी जनता का प्रतिनिधित्व करने की चुनौती है। प्रतिनिधि सभा में यह प्रस्ताव 212 के मुकाबले 219 मतों से खारिज हो गया। इस नतीजे ने अमेरिका-इजराइल सैन्य अभियान और ट्रंप द्वारा संसद को दरकिनार करने के फैसले के समर्थन और विरोध की स्थिति को स्पष्ट कर दिया। अमेरिकी संविधान के अनुसार युद्ध घोषित करने का अधिकार केवल संसद को है।

सदन की विदेश मामलों की समिति में शीर्ष डेमोक्रेट सांसद ग्रेगोरी मीक्स ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप कोई राजा नहीं हैं और यदि उन्हें लगता है कि ईरान के साथ युद्ध राष्ट्रीय हित में है तो उन्हें संसद के सामने आकर अपना पक्ष रखना चाहिए। वहीं, सदन के अध्यक्ष माइक जॉनसन ने आगाह किया कि जब अमेरिकी सेना पहले से संघर्ष में शामिल है तब राष्ट्रपति की शक्तियों को सीमित करना खतरनाक होगा। रिपब्लिकन पार्टी के अधिकतर नेता ट्रंप के साथ खड़े दिखायी दिए जबकि ज्यादातर डेमोक्रेट इस युद्ध का विरोध कर रहे हैं। कुछ रिपब्लिकन नेताओं का मानना है कि यह संघर्ष नया युद्ध शुरू करने के बजाय ऐसे ईरानी शासन का अंत हो सकता है जो लंबे समय से पश्चिम के लिए खतरा रहा है। इस अभियान में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो चुकी है, जिससे कुछ लोग वहां शासन परिवर्तन की संभावना देख रहे हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा कि यह युद्ध लगभग आठ सप्ताह तक जारी रह सकता है, जो राष्ट्रपति के शुरुआती अनुमान से दोगुना है। वहीं, ट्रंप प्रशासन का कहना है कि इस अभियान का उद्देश्य ईरान की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता को नष्ट करना है, जो उसके परमाणु कार्यक्रम की सुरक्षा करती है।